कीजे नृपति वेगि यह काजे अरुको आप समानीजी ॥ १ ॥
मुखते आयसु जो करि पाऊं ब्रज कोउ देहुँ पठाईजी ॥
सुफलक सुत ऐसे कहि वाणी सुनि नृप मन हरषाईजी ॥
फिरि फिरि कहत हिये गर्वाई अब मारों दोउ भाईजी ॥
तब अक्रूर विदा घर कीनों रह्यो सोच मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा—परयो सजग आलस जिये, पलक लगी झपकाइ ॥
लगीं करन सेवा चरण, रानिन सब तहँ आय ॥

चौ०-रानिन सब तहँ आइ नृपतिने सपने लखे कन्हाईजी ॥
काल समान देख दोउ भाई झिझकि उठो भय पाईजी ॥
देख्यो जागि तहाँ कोउ नाईं चकित भयो मन माईजी ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई कहा झिझके नृपराईजी ॥ १ ॥
महाराज झिझके कहा हो सपने आज सकाईजी ॥
कहिये काको सोच तुम्हारे मनमें रह्यो समाईजी ॥
सहजहि रानिन सों कह्यो कछु जियमें अति सकुचाईजी ॥
मनहिं शंक उर लगी धकधकी भेद न कह्यो जनाईजी ॥

दोहा—श्याम राम भय तजत नहिं, उरमें रह्यो समाय ॥
सावधान प्रतिपालकरि, योधा लिये बुलाय ॥

चौ०-योधा लिये बुलाय मनहिं अति सोच न प्रगट जनावैजी ॥
जाग्यो आप संग सब नारी याम युगहि सम जावैजी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई कबहूँ आंगन आवैजी ॥
घरयालीसों पूँछि पठावै निशिकी खबर मँगावैजी ॥ १ ॥
सोचत सब प्रातहि कहा करिहैं क्रोध भयो नृपराईजी ॥
रही घरी निशि कछु यक बाकी युग समान क्षण जाईजी ॥
कहत ब्रजहि धौं काहि पठाऊँ नँदके सुवन मँगाईजी ॥
अक्रूरहि अब देहुँ पठाई ल्यावहि ठगि दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–देख्यो सुपनो नन्द इत, हरि कहुँ गये हिराहि॥
ग्वाल बाल रोवत सकल, कहत श्याम ब्रज नाहिं॥
चौबोला–कहत श्याम ब्रज नाहिं संगही खेलत रहे कन्हाईजी॥
निठुर होय कहुँ अंत सिधारे दुखित ग्वाल मनमाईजी॥
दूत एक आयो सो अपने सँग लेगयो लिवाईजी॥
ह्वै गये वाईके दोउ भाई ब्रजबासिन बिसराईजी॥ १॥
मुरछितपरे नन्द तब धरणी सुनतहि अति अकुलाईजी॥
श्याम विरह व्याकुल अति देखी विवस यशोमति माईजी॥
व्याकुल ब्रजवासी नर नारी पशु पंछी मुरझाईजी॥
रोवत परे धरणि दुख पावत तब जागे नँदराईजी॥ २॥
दोहा–धक धकात उर नन्दके, रह्यो नैन जल छाय॥
लखि सुत मन धीरज भयो, रहे अंग परसाय॥
चौबोला–रहे अंग परसाय यशोदहि ससकत नन्द लखायोजी॥
कहा भरमे पूँछत नंदरानी नन्द न भेद जनायोजी॥
श्यामहिं लखि धीरज उर आयो रवि ऊगन नाहिं पायोजी॥
सुफलक सुत उत कंस बुलायो सुनत दूत उठि धायोजी॥१॥
सोवत ते अक्रूर जगायो बोलत कंस सुनायोजी॥
समझि मंत्र निशि चल्यो उदासा द्वारहि ठाढो पायोजी॥
देखत दूरहिते शिरनायो आदर निकट बुलायोजी॥
शिरोपाव नृप तुरत मँगायो अक्रूरहि पहरायोजी॥ २॥
दोहा–बहुत कृपा करि वचन कहि, तुम अति प्यारे मोय॥
ल्यावहु बालकनंदके, तुम सम और न कोय॥
चौबोला–तुम सम और न कोय सुनत दुख ऊपर मन हरषाईजी॥
असुर त्रास जियमाहिं परचो तब वचन कह्यो नाहिं जाईजी॥
जाहु वेग नृप कह्यो ब्रजहि अब दीनो रथहि चढ़ाईजी॥

अब विलंब नहिं कीजिये शीघ्रहि ले आवहु दोउ भाईजी ॥१॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी सुनहु अरज नृपराईजी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भाई जात चरावन गाईजी ॥
जो उनको घर मैं नहिं पाऊं ताते अरज सुनाईजी ॥
आज नन्दगृह बसिहौं जाई भोर होत लै आईजी ॥ २ ॥

अथ अक्रूर ब्रजगमन लीला।

दोहा—ऐसे जब अक्रूर कहि, कंस मान लइ बात ॥
शीशनवा तब रथ चढ़यो, सुफलक सुत ब्रज जात ॥
चौबोला—सुफलक सुत ब्रजजात कंस नृप लीने मल्ल बुलाईजी ॥
चाणूरादि सकल चलि आये कहा आयसु नृपराईजी ॥
तिनसों कह्यो सुनो सब वीरा रहत नंद ब्रज माईजी ॥
कहियत बली तासु सुत नामहि कह बलिराम कन्हाईजी ॥
बहुत असुर मारे उन मेरे हैं वे शत्रु हमाराजी ॥
नंद महरके वे दोउ बालक कहियत बलहि अपाराजी ॥
ताकारण मैं तुमहि बुलाये सजग रहो अब साराजी ॥
उनको मति जानो तुम बारे महाकठिन बल भाराजी ॥ २ ॥

दोहा—उनहिं बुलाये मधुपुरी, दियो अक्रूर पठाय ॥
रंगभूमि ताते रच्यो, चित्र विचित्र बनाय ॥
चौबोला—चित्र विचित्र बनाय तहां सब सावधान रहो जाईजी ॥
ऊँचो एक मचान रचो तहां सुन्दर और बनाईजी ॥
जहां असुर परधान सकल मिल बैठो मोढिग आईजी ॥
सावधान करि सब बैठाये योधा सकल बुलाईजी ॥ १ ॥
और पौरिके बाहर राखो गजहि कुवलिया ल्याईजी ॥
राखो द्वार तीसरे जाई कठिन धनूष धराईजी ॥

बहु भट तहां रहो रखवारी अति बलि शस्त्र सजाईजी॥
ऐसे सजग रहो सब कोऊ जब आवैं दोउ भाईजी॥२॥

दोहा–प्रथमहिं उनसों यह कहो, आवहु धनुष उठाय॥
जब वे नाहिं उठाइहैं, घेर लेहु सब धाय॥

चौबोला–घेर लेहु सब धाय तहां तुम मार लेहु दोउ भाईजी॥
भीतर लौं आवन जिन दीजै जो कदापि बच जाईजी॥
तो गजपै आवन नहिं पावैं डारो चरण खुँदाईजी॥
तुमको राखत अबहिं जताई छलकर जात बचाईजी॥१॥
तो सब मल्ल मारि उन लेहू रंगभूमि नहिं आवैजी॥
मोसमीप आवन मति दीजौ ऐसे सबन जनावैजी॥
सजग रहो इह भांति सबनको ठौरहि ठौर सजावैजी॥
जिहिं तिहिं विधि मारो दोउ भाई यहै बात मन भावैजी॥२॥

दोहा–ऐसे आयसु दे सबन, गयो सदन नृपराय॥
सुनहु कथा अक्रूरकी, चल्यो ब्रजहि समुहाय॥

चौ०-चल्यो ब्रजहि समुहाय सुफलकसुत मन मन सोचत जाईजी
हैं नृप कंस बडो हत्यारो पठयो लेन कन्हाईजी॥
कैसे आनदेहुँमैं जाई मारेगो दोउ भाईजी॥
नगर निकस रथ कीनो ठाढो रह्यो सोच मन माईजी॥१॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरि मन रह्यो नैन जल छाईजी॥
अति बालक बलराम कन्हाई कहा करों कछु न बसाईजी॥
मुहिं मारो चाहे बन्द करावो यह विचार ठहराईजी॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावै चलत फिरत नाहिं आईजी॥२॥

दोहा–प्रभु कृपालु सर्वज्ञ हरि, सुमिर हृदय यह आइ॥
मनहिं कहत अक्रूर वे श्रीपति त्रिभुवनराइ॥

चौबोला-श्रीपति त्रिभुवन राइ उत्पती पालन अरु संहाराजी॥

भूमि भार टारन अवतारा प्रभु गुण रूप अपाराजी ॥
धन्य कंस मुहिं लेन पठायो कीनो यह उपकाराजी ॥
जाय रूप वह देखहुँ नैनन सुन्दर नन्दकुमाराजी ॥ १ ॥
तब रथ हाँकि चल्यो सुफलकसुत यह विचार मनभायाजी ॥
भयो शकुन शुभ अतिशयभारी मृग गण दाहिने आयाजी ॥
दाहिने देखि मृगनकी माला सुफलक सुत हरषायाजी ॥
कहत आज इन शकुन न जाई मिलि हो त्रिभुवन रायाजी॥२॥

दोहा–मोर मुकुट कुंडल ललित, अरु बनमाल सुहाय ॥
कटि कछनी पट पीत छबि, चन्दन खौर लगाय ॥

चौबोला-चन्दन खौर लगाये नटवर भेष किये सुखदाईजी ॥
ह्वै हैं गैयनके सँग ठाढे ग्वालन मध्य कन्हाईजी ॥
सो दरशन लखि होंय सनाथा परिहौं चरणन धाईजी ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं महिमा वेदन गाईजी ॥ १ ॥
जिन चरणन कमलारति मानी पलक ओट नाहिं चावैजी ॥
शंभु धरचो जिनको शिर पाणी निशि दिन ध्यान लगावैजी ॥
सनकादिक नारद यशगावै योगीजन सब ध्यावैजी ॥
बलि जिनकी मर्याद न पाई महिमा कहत न आवैजी ॥ २ ॥

दोहा–शिला शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर ॥
जाय देखहों ते चरण, सकल सुखनकी सीर ॥

चौ०-सकल सुखनकी सीर अंकित कुलिश अंकुश ध्वजह्वै हैजी॥
गोप बालकन संग कन्हाई गोचारत बन पैहैंजी ॥
परिहो जाय चरणपर जबहीं भुजभर मोहिं उठैहैंजी ॥
परसत उर मन अति सुख पाई आनँद उर न समै हैंजी ॥ १ ॥
देखत दरश परमसुख ह्वैहैं दृगन प्रेमजल ऐहैंजी ॥
कुशल पूछि हैं मोहिं कन्हाई वचन कहे नाहिं जैहैंजी ॥

वार वार वाणी मृदु कैहैं सुनत श्रवण सुख पैहैंजी ॥
यों अक्रूर ध्यान में अटक्यो पंथ गवन सुधिनेंहैंजी ॥ २ ॥
दोहा-हरि अनुराग उर में भरचो, रही देह सुधि नाहिं ॥
को मैं कितको जात हों, जानत नहिं मन माहिं ॥
चौबो०-जानत नहिं मन माहिं सांझ भइ गोकुल पहुँचन पायोजी।
रथ बाहनकी सुरत भुलानी कित मुहिं कौन पटायोजी ॥
भयो हरष उर प्रेम विसाला जित तित हरिहि लखायोजी ॥
हरि अन्तर्यामी भक्तन वश वेदनमें यश गायोजी ॥ १ ॥
भक्तवत्सल है जिनको नामा भक्त भाव कोउ ध्याईजी ॥
मिलत तिन्हें नहिं बिलम लगावै भक्तनके सुखदाईजी ॥
वृंदावन ग्वालन सँगमाईं चारत धेनु कन्हाईजी ॥
चले हरषि हलधर सहित हरि भक्त हेतु मन आईजी ॥ २ ॥
दोहा-हेरी गावत हरषि हरि, यमुन पार करि गाय ॥
लगे गोदोहन करन, ग्वालन सँग सुख पाय ॥
चौ०-ग्वालन सँग सुखपाय भक्त हित यह हरि सुखउपजायोजी
तहाँ दरश सुफलकसुत पायो रहि न सक्यो अकुलायोजी ॥
उतर परचो भूपर अति व्याकुल भयो सकल मनभायोजी ॥
दौरि श्याम चरणन शिरनायो आनँद उर न समायोजी ॥ १ ॥
हृदय उमँगि आनंद अपारा मगन प्रेम जलछायोजी ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो भक्तजान उरलायोजी ॥
भयो सुख सो सोई जाने विहारन कहत न आयोजी ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनों सोई दरश दिखायोजी ॥ २ ॥
दोहा-मधुर वचन सुन्दर सुखद, पूँछत हरि हँसि बात ॥
तब बोल्यो अक्रूर सँभरि, कुशल दरश लखिनाथ ॥
चौबोला-कुशल दरश लखिनाथ दैत्य दल भक्तनके सुखदाईजी

भेदाहि भेद कंसकी वाणी सुफलक सुत प्रगटाईजी ॥
सुनत वचन मुख सुफलक सुतके मुसके कुँवर कन्हाईजी ॥
फरकि भुजा भू भार उतारन टारन असुर निकाईजी ॥ १ ॥
परमप्रीति अति सुफलक सुतसों मिले राम पुनि आयेजी ॥
वासुदेव सुत दोउ निरखिं तब आनँद उर न समायेजी ॥
कहि कहि उठत यहै नँदलाला हमको कंस बुलायेजी ॥
लेनेको अक्रूर पठाये काल्हहि भोर मँगायेजी ॥ २ ॥

दोहा—चकित भये सुनि ग्वाल सब, कहा कहत बलबीर ॥
भये प्रेमवश सकल तब, भरे दृगनमें नीर ॥

चौबोला—भरे दृगनमें नीर सबन जब देखि श्याम सुखदाईजी ॥
तब बोले हरि करी सयानी जिन डरपहु कोउ भाईजी ॥
चलहु काल्हि देखहिं नृप कंसहि अरु चिंता कछु नाईजी ॥
यह कहि चले सकल ब्रजबालन कछु डर कछु हर्षाईजी ॥ १ ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई लिये अक्रूर उठाईजी ॥
लसत दोउ सुफलक सुत कनियां सुमनहुँते हरुवाईजी ॥
ग्वालन सबन लियो रथ डोरी पहुँचे सब ब्रज जाईजी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रजलोग चकाने देखि डरे नँदराईजी ॥ २ ॥

लावनी।

निशि स्वप्न जानि मन माहिं नन्द भय पायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥

टेक—सब नन्द और उपनन्द लेन जब आये ॥
तब नर नारिनके वृन्द सुनत उठ धाये ॥
दोउ राम श्याम लिये गोद अक्रूर लखाये ॥

देखत तब सब मन माहिं कछुक हरषाये ॥
अतिकर आदर सन्मान सबन शिरनायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥
सब मिल पूंछी कुशलात घरहि ले आये ॥
व्यंजन कर नाना भांति भोजन करवाये ॥
मिल अक्रूरहि दोउ भ्रात अधिक मनलाये ॥
मानहुँ कीनो प्रतिपाल इनहिं दुलराये ॥
अक्रूरहि सँग सब लखत •दुहुँन मिलखायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥ २ ॥
उठ अचये दीने पान पलँग बैठाये ॥
कहा कृपाकरी कह नन्द कहो किम आये ॥
अक्रूर कह्यो दोउ भ्रात नृपति बुलवाये ॥
तुमको कह्यो आवैं संग यो वचन सुनाये ॥
तुम्हें लेन काज नृपराजहि मोहिं पठायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥ ३ ॥
सुनि सुनि इनके गुण रूप नृपति हरषाये ॥
देखनकी है अभिलाष बहुत मनभाये ॥
लै चलो इन्हें अब प्रातहि वेग बुलाये ॥
यों सुफलकसुत मुख सुनतहि नन्द डराये ॥
यह बानी सुनि ब्रज लोग सबन दुख पायो ॥
देख्यो निज नैनन दूत कंसको आयो ॥ ४ ॥
दोहा—चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलात ॥
हरि हलधरको सैन दे, सबहि बुलावत जात ॥
चौबोला—सबहि बुलावत जात काहुतन हेरत नाहिं दोउ भाईजी ॥
योग वियोग नहीं कछु जाके माया रचित कन्हाईजी ॥

अविगति अविनाशी पुरुष प्रभु आनँद एक सदाईजी॥
कीनो चहैं भूमि सुरकाजे भक्तनके सुखदाईजी॥ १॥
ताते नहिं काऊ तन हेरत बोलत नाहिं कन्हाईजी॥
जनु पहिचान कबहुँ की नाईं डरपत लोग लुगाईजी॥
कहत हरी सुफलकसुत सो यों बोले हम नृपराईजी॥
हुती साध हमरे मन माईं बोलत नृप क्यों नाईजी॥ २॥
दोहा–हँसि हँसि ऐसे कहत हरि, सुनि सब मन अकुलात॥
भये नेह तजि दूर प्रभु, हरि कछु मन नहिं ल्यात॥
चौ०-हरि कछु मन नहिं ल्यात नारि सब आपुसमें बतराईजी॥
कहति परस्पर तिय अकुलाईं आयो यह दुखदाईजी॥
महाक्रूर अक्रूर नामको जैहैं श्याम लिवाईजी॥
कैसे प्राण रहेंगे आली जान कहत सुखदाईजी॥ १॥
विलखि वचन शोचत सब ठाढ़ी मानहुं चित्रलिखाईजी॥
ठौर ठौर ऐसी दशा भई वचन कहे नहिं जाईजी॥
बढ़ी व्यथा हरिके बिछुरनकी रह्यो नैन जल छाईजी॥
भली भांति देखन नृपपैहैं हम तुम्हरे सँग माईजी॥ २॥
दोहा–पूछत एकहि एकसों, फिरत विकल सब ग्वाल॥
मन मलीन व्याकुल सबै, चलन कहत नँदलाल॥
चौ०-चलन कहत नँदलाला सखा जब रहे सकल विलखाईजी॥
ब्रजके लोग विकल सब देखे तब अक्रूर सुनाईजी॥
चिंता मतहि करो मनमाईं इनको कछु डर नाईंजी॥
भंजन धनुष यज्ञके काजै बोले हैं नृपराईजी॥ १॥
व्याकुल महरि यशोमति धाई परी चरणमें आईजी॥
सुफलक सुत हम दास तुम्हारी ऐसे विनय सुनाईजी॥

१ जिनकी गति समझी न जाय। २ नाशरहित। ३ अक्रूर।

संतत धाम परम उपकारीतुम्हरी सुनी बड़ाईजी ॥
बडे दुखन सों ये प्रतिप्याले राम श्याम दोउ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहा धनुष ये तोरहीं, मल्लनको कहा जान ॥
राजसभादेखी कहां, कबकी नृप पहिचान ॥
चौबोला—कबकी नृप पहिचान भूप अब बोलेहैं दोउभाईजी ॥
राज अंश उनको सब दीनो और देहुँ अधिकाईजी ॥
मैं कहा करों सुतनको देकै जावहु नँद लिवाईजी ॥
हे अक्रूर कहत क्यों नाईं कहाकरिहैं येजाईजी ॥ १ ॥
कहा धनुष ये देखिहैं अबहीं बालक अति अज्ञानाजी ॥
कियो नृपाति कछु कपट यहसो परत मोहिं यों जानाजी ॥
देहुँ नहीं मैं जान मधुपुरी मोनिधनी धन कान्हाजी ॥
को जीवे नँद नन्द बिना अब लेहु कंस बरु प्राणाजी ॥ २ ॥
दोहा—कहत यशोमति बिलखि यों, हरिसों अति दुखपाय ॥
मोहन मम छोहन अब, दई लाल विसराय ॥
चौबोला—दई लाल बिसराय यशोमति हरिसों कहत सुनाईजी॥
मथुराजाहु नमैं बलिहारी दुखित जान निजमाईजी ॥
ये अक्रूर क्रूर कृत रचिकै आयो रथहि सजाईजी ॥
तिरछी भई करमगति आई विधना कहा बनाईजी ॥ १ ॥
मोसों मात महरसों ताता कहत रहत दोउ भाईजी ॥
कैसे रहिहैं प्राण हमारे यह सुख जान कन्हाईजी ॥
मथुरा में कहा काज तिहारो ऐसी कहा जिय आईजी ॥
निरखि रूप यशुमति अकुलाई परी धरणि मुरझाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहि अब लेवे प्राण हरि, तजत निठुर है कान्ह ॥
क्यों आये अक्रूर यहां, लेवन मेरे प्राण ॥
चौबोला—लेवन मेरे प्राण सुफलकसुत ऐसी मन न विचारोजी ॥

दोउकर जोर करों मैं विनती मेरी ओर निहारोजी ॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारो दीननको कित मारोजी ॥
करिहो सूनो भवन हमारो कछु तो दया उर धारोजी ॥ १ ॥
रोवत वदन रोहिणी मैया ब्रजजीवन दोउ भाईजी ॥
भये निठुर अक्रूरहि मिलके घरहूँ आवत नाईजी ॥
कहा करों कासों कहूं अब को राखे गहिबाईजी ॥
ऐसे दुखित भई महतारी शोच रही मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–जहाँ तहाँ विलखी कहैं, अति व्याकुल ब्रजवाम ॥
धृक जुर हैं सखि प्राणतनु चलन चहत घनश्याम॥

चौ०-चलन चहत घनश्याम परस्पर कहति सकल ब्रज नारीजी
कहां वह सुख हरिको सँग सजनी शरद रैनि उजियारीजी ॥
हरिमुख शशि छवि आनँदकारी लखि दृग रहे सुखारीजी ॥
पियत अधर रस मनहिं अघाई हरि गरबहियाँ डारीजी ॥ १ ॥
जग उपहास सह्यो जिहिं लागी कुल मर्यादा डारीजी ॥
करी कठिन विधि कर्म कुचाली छूट्यो चहत मुरारीजी ॥
कहूं सखी फिर कबहूं ऐसे मिलि हैं श्रीबनवारीजी ॥
कहिहैं बहुरि बात हरि हँसि अब लागत निठुर विहारीजी ॥२॥

दोहा–निशि दिन कर उर वज्र सम, अब सहिहैं दुख प्रान ॥
एक कहतरी सुन सखी, अब नाहिं जैं हैं कान्ह ॥

चौबोला–अब नाहिं जैंहै कान्ह यशोमति पै सखि जान न पाईजी
कहा करिहैं अक्रूर हमारो फिर जैहैं पछिताईजी ॥
मोहिं जिय विश्वास सखी हरि हमें तजि जैहैं नाईजी ॥
छांड़ि यशोमति पास लेहिंगे कहा मधुपुरी जाईजी ॥ १ ॥
सुन ताकी वाणी सब नारी धरयो तनक मन धीरैजी ॥
जो रंग राची श्याम सुन्दरके सो जाने यह पीरैजी ॥

करत नन्द उपनन्द विचारै अरु तहँ सकल अहीरैजी ॥
को जाने कहा नृप मनमाई अति बालक बलवीरैजी ॥ २ ॥
दोहा—नृप आयसु सो नामिटै, अति बालक दोउ भाइ ॥
भये सकल व्याकुल तहां, शोच रहे नँदराइ ॥
चौ०-शोच रहे नँदराइ तबै इक बोल्यो गोप पुरानोजी ॥
कहन लग्यो परताप हरीको उरमें राखिसहानोजी ॥
कहतकि मो मनमें यह आवै करो कहत सो कान्होजी ॥
इनको बालककर मति जानो कहे गर्ग परमानोजी ॥ १ ॥
ये करता हरता सबहीके तब कहि गर्ग सुनायोजी ॥
निज गिरि करधर ब्रजहि बचायो पुनि बैकुंठ बतायोजी ॥
जाहि गयो सुरपति[1] शिरनाई नाग नाथ लेआयोजी ॥
वरुण धाम देखी प्रभुताई सो तुमहीं लखि पायोजी ॥ २ ॥
दोहा—कितिक धनुष हरि तोरि हैं, कहा कंस भूपाल[2] ॥
जो करिहैं कछु कपट तो, सब समरथ गोपाल ॥
चौ०-सब समरथ गोपाल हरी अरु हलधर दोऊ भाईजी ॥
हरषे सुनत अहीर समुझि सब हरिप्रताप मनमाईजी ॥
सब लायक[3] बलबीर धीर कछु भयो हृदयमें आईजी ॥
कहति यशोमति अति अकुलाई रहहू कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं तुम विन मैं मरजाईजी ॥
कहत राम सुनि यशुमति माई बारो नाहिं कन्हाईजी ॥
मतिहि कंस भय व्याकुल होवे हरिको कछु डर नाईजी ॥
प्रथमहिं बकी कपट कर आई विष कुच सों लपटाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चारहि दिनके तब हरी, तो देखतहिं नशाइ ॥
शकट तृणावर्त वत्स बक, अघ, केसी, दुखदाइ ॥

१ इंद्र। २ राजा। ३ योग्य।

चौ०-अघ केसी दुखदाय एकही पलमें दिये नशाईजी ॥
विष जलते सब सखा उबारे गिरिको लियो उठाईजी ॥
हरि सन बली और कोउ नाईं मति डरपै मनमाईजी ॥
हम बालक कहा तुमहिं सिखावैं शीघ्रहि ऐहैं जाईजी ॥ १ ॥
सुने चरित हरिके तब जननी हृदय रही विलखाईजी ॥
जो कछु करैं सो सत्य प्रभू अब मन मन रही पछिताईजी ॥
मैं ले जैहों संग हरीको कह्यो नन्द समुझाईजी ॥
लै ऐहों तुरतहि बहुरि यहां धनुषयज्ञ दिखराईजी ॥ २ ॥

अथ मथुरागमन लीला।

दोहा—ऐसेहिं बीती रात सब, भयो प्रात तब आय ॥
लीने गोप बुलाय सब, कह्यो महर नँदराय ॥
चौबोला—कह्यो महर नँदराय दधिहि घृत लेवहु भारभराईजी॥
नृपति भेट हित धरहु सँजोई चलहु सकल सँगभाईजी ॥
ग्वाल सखा सुनि कह अकुलाई मधुपुरी जात कन्हाईजी ॥
परचो शोर ब्रज घर घर माईं हरिमुखदेखन धाईजी ॥ १ ॥
सजत ग्वाल चलबेको साजैं दुहत न कोऊ गाईजी ॥
जोतहु तात तुरत रथ अबहों कह्यो श्याम सुखदाईजी ॥
सुफलक सुत आयसु जब पाई, तब रथ लियो पलनाईजी ॥
अक्रूरहि तजि नेकहु न्यारे, होत न दोऊभाईजी ॥ २ ॥
दोहा—देखि यशोमति दुखित अति, परी धरणि मुरझाय ॥
अकुलानी व्याकुल परी, अतिहि रही बिलखाय ॥
चौ०-अतिहि रही विलखायकहन लगी मोहितजतसुखदाईजी ॥
जातकिये सूनो ब्रज प्यारे कहा तुम्हारे मनभाईजी ॥
यह अक्रूर ठगोरी लाई मोहे बाल कन्हाईजी ॥

हे अक्रूर हरे मो बालक तुम्हें बूझिये नाईजी ॥ १ ॥
विरध समयकी लई लकुटिया मेरो श्याम विहारीजी ॥
लाभ कछू यामें तुम पायो देखहु मनहिं विचारीजी ॥
क्रूर भये इत आय तुमहिं अब दियो धर्म डर डारीजी ॥
चलत जान चितवत ब्रजनारी व्याकुल सुरत विसारीजी ॥२॥
दोहा—चित्रपूतरीसी रही, भई सखी सब दीन ॥
श्याम विरह व्याकुल अतिः, नीर हीन जिमि मीन ॥
चौबो०-नीरहीन जिमिमीन दुखित अति वदन गयो कुम्हिलाईजी
मानो हीम परसि सो तुरताहि गये कमल मुरझाईजी ॥
कहत परस्पर वचन अधीरा रह्यो दृगन जल छाईजी ॥
लिये जात अक्रूर हमारो जीवन प्राण कन्हाईजी ॥ १ ॥
करहु सखी कछु यत्न सँवारी जात चले सुखदानीजी ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहै पुनि रहियो पछितानीजी ॥
परिहरिये यश आश जीयकी लाज पंचकी कानीजी ॥
करिये विनती श्यामसुन्दर सों सखि समयो पहिचानीजी ॥२॥
दोहा—पाँयन पर हरि राखिये, होनी होय सो होय ॥
समय चूक उर शालि हैं, नातर मरिहैं रोय ॥
चौबोला-नातर मरिहैं रोय कहाति अंतर्यामी बनवारीजी ॥
विरह विकल गोपी जन जानी हरिजनके सुखकारीजी ॥
चितये नैन कमलदल लोचन सोच विमोचन हारीजी ॥
मृदु मुसकान ठगोरी डारी श्याम ठगी ब्रजनारी जी ॥ १ ॥
रहगई चितवत वचन न आयो चढ़े रथहि सुखदाईजी ॥
हरिको नाम सुमिर मनमांई चढ़े अक्रूरहु आईजी ॥
देखि यशोमति टेर लगाई पुत्र पुत्र कहि धाईजी ॥
बिछुरत लाल भेट मुहि देहू चितवहु इतहि कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–राखहु जननी बोधि करि, मैं बलिजात कन्हाइ ॥
बहुरो चढो विमान हरि, कहति यशोमति माइ ॥
चौवोला-कहति यशोमति माइ जन्मको लेहों सुखहि निहारीजी॥
बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो जात चले बनवारीजी ॥
ऐसे कहि ग्वालनको फेरे घेरहुगाय तुम्हारीजी ॥
विलखत विकल राम महतारी अति व्याकुल ब्रजनारीजी ॥१॥
देखि दुखित ब्रजलोग हरी सब और यशोमति माईजी ॥
तब हरि कहि सुखदियो सबनको बहुरि मिलूंगो आईजी ॥
तब चितये मथुरा तन मोहन धरणी हित सुखदाईजी ॥
कह्यो हगंन सनकारि हाँकरथ अक्रूरहि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बार बार यशुमति कहैं, राखहु कोउ गोपाल ॥
सुफलकसुत वैरी भयो, हरे आय मम बाल ॥
चौ०–हरे आय मम बाल कंस बर हरहु द्रव्य सब गाईजी ॥
कै करि मोहिं बंदि में डारो रहै श्याम घर माईजी ॥
खेलहिं मो नैननके आगे मेरो बाल कन्हाईजी ॥
यह कहि महि लोटत अकुलाई दुखित यशोदा माईजी ॥ १ ॥
रहगइ प्रेम वियोगन ठाढी गोपीजन मुरझाईजी ॥
जिमि कुमुदिन गण नीर विहीनी रवि प्रकाश कुम्हिलाईजी ॥
बहुरों मिलन कठिन जियजानी श्याम विमुख दुख पाईजी ॥
बल बुध थकित श्रवत जल लोचन संग चलन मन चाईजी ॥
दोहा–खेड़ेलों मिल सब गईं, अतिहि दुखित बेहाल ॥
ब्रजताजि हरि मथुरापुरी, कियो गमन गोपाल ॥
चौबोला–कियो गमन गोपाल लिये मधु अक्रूरहि चले जाईजी॥
माखी जिमि सब दई विडारी रहीं सकल पछिताईजी ॥
जब लगि धूरि दृष्टि में आई देख रही टकलाईजी ॥

भये ओट जब दीसत नाईं मुर्छे परी बिलखाईजी ॥ १ ॥
कहति गयो रथ दूर सखी अब धूर न परत लखाईजी ॥
मनहर लेगयो श्याम सलोनो कहा करैं ब्रज माईजी ॥
लखन चहत पाछेई लोचन परत न आगे पाईजी ॥
भई न पवन संग उड़ि जाती विकल विरहरस छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–रजहूनहिं मुहिं विधि करी, रहती पदलपटाइ ॥
भई न लकरी रथहुकी, जाती संग कन्हाइ ॥

चौबोला–जाती संग कन्हाइ आज सखी बिछुरे हरि सुखदाईजी॥
तो परतीत हगनकी नाशी गये न संग कन्हाईजी ॥
कृष्ण भयो नहिं भये अभागे लोभी रूप कन्हाईजी ॥
सो करनी कछु इन नाहिं कीनी वृथा मीन छबि पाईजी ॥ १ ॥
धनि धनि मीन प्रीति पथ सांची काचे नैन हमारेजी ॥
अब ये सहत जीय यह सोचत उमगि उमगि जलढारैजी ॥
हरि बिन अब लखिये ब्रजसूनो सहिहैं अति दुख भारैजी ॥
काऊ चलत गह्यो रथनाईं रहि गईं करत विचारै जी ॥ २ ॥

दोहा–वृथा लाजकरि जगतकी, दीनोंकाज बिगारि ॥
समय चूक अब सबसहो, दुसह विरह दुखभारि ॥

चौबोला-दुसह विरह दुखभारि सहो यों ब्रजतिय मन पछिताईजी
देखि यशोदहि दीन सकल मिल नन्दधाम में ल्याईजी ॥
हरि बिन सुख संपति सब सपनो ब्रजजन रहे दुख पाईजी ॥२॥
रहे प्राण इहि आश श्याम कहि बहुरि मिलोंगो आईजी ॥ १॥
खग मृग विकल जहाँ तहाँ बोले गैया वत्स रँभावेजी ॥
ब्रजकी दशा कहत नहिं आवे तरु वेली कुम्हिलावेजी ॥
ब्रजवासिनको धीरज देके नन्द गोप तब जावेजी ॥
ग्वाल सखा हरिके सुखदाई दरशन लगि सब धावैजी ॥ २ ॥

दोहा–उत अक्रूर सोचत भयो, भलो काज कियो नाहिं ॥
अति कोमल भैया दोऊ कहत मनहिं मन माहिं ॥
चौ०–कहत मनाहिं मन माहिं बलहि अरु मोहन ये दोउ भाई जी
अति कोमल नव नन्दपियारे जननी रही दुख पाईजी ॥
व्याकुल सबै घोषकी नारी मैं नृपपहिं लेजाईजी ॥
मो देखत मारैगो इनको धृक मुहिं यह बुधि आईजी ॥ १ ॥
जाहुँ लिवाय इन्हें ब्रज फेरी सुफलकसुत मन आईजी ॥
कंस आज मारै बरु मोही लेजैहों हरि नाईजी ॥
इहि अंतर यमुना नियराई ठाढो कियो रथ तहाँईजी ॥
अन्तर्यामी हरि भगवाना भक्त हृदयकी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भूखलगी तब हरि कह्यो, हमें कलेऊ देहु ॥
करि यमुना स्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु ॥
चौबोला–तात तुमहुँ कछु लेहु सुनतही मधुर वचन सुखदाईजी
सुफलकसुत तब दियो निकारी मेवा और मिठाईजी ॥
भोजन करत तहाँ दोउ भाई सो छबि कहत न आईजी ॥
आप स्नान करन मन कीनो पैठि यमुनके माईजी ॥ १ ॥
जबहीं शिश नीरमें डारचो अचरज एक लखाईजी ॥
राम कृष्ण रथ पर दोउ भाई जलभीतर छबि छाईजी ॥
चकित भयो जलते शिरकाढ्यो देख्यो रथ तिहिं ठाईजी ॥
बहुरो बूड़ि सलिलमें पेख्यो वैसोई रथ दरशाईजी ॥ २ ॥
दोहा–क्षण जलमें क्षण प्रगटही, रह्यो अक्रूर निहारि ॥
पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि करि, मन मन रह्यो विचारि ॥
चौ०-मन मन रह्यो विचारि जाग्रत यह किधौं स्वप्न मुहिं आयाजी
कैधौं मोमाति में भ्रमहोई कै यह रथकी छायाजी ॥
कैधों यह हरिकी कछु माया सो कछु भेद न पायाजी ॥

भयो विकल मति थित कछु नाईं पुनि देखत अतुरायाजी॥ १ ॥
जब अक्रूर बहुत अकुलायो रही देह सुधि नाईजी ॥
निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो लखत भयो जल माईंजी ॥
सकल देव ठाढे हरि पाई रहे चरण चित लाईजी ॥
नमित कंधकर संपुट कीने देवन स्तुति गाईजी ॥ २ ॥

दोहा—शेष सहस फणि मणिन युत, जगमग ज्योति अनूप ॥
श्वेत वरण पट नील युत, राजत हलधर रूप ॥

चौबोला-राजत हलधर रूप पीत पट नील जलजतनु श्यामाजी॥
चारु अरुण पंकज दल नैना चितवन छबिकी धामाजी ॥
चारु तिलक बरभाल विराजै कुटिल भौंह अभिरामाजी ॥
चारु तिलक नासा अति सुन्दर सोभित सुभग ललामाजी ॥१॥
चारु कपोल अधर अरुणाई चारु दशन छबि छाईजी ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा सोछवि वरणि न जाईजी ॥
उदर विसाल श्रीचिह्न विराजै रोमावली सुहाईजी ॥
नाभि गंभीर सुभग कटि सुन्दर भुज छबि अति अधिकाईजी॥२॥

दोहा—जंघ गुलफ सुन्दर छबिः, पद नख शशि छविछाइ ॥
नख शिख अनुपम रूप हरि, दिव्याभरण सुहाइ ॥

चौ०—दिव्याभरण सुहाइ मुकुट कुंडल सोभित छवि भारीजी
मुक्तमाल वनमाल रसाला पीतांबर रहे धारीजी ॥
कौस्तुभमणि अँग अति छबिराजै अँगुरिन मुँदरी न्यारी जी ॥
शंख चक्र गदा पद्म बिराजै छुद्रिघंटि दुति कारीजी ॥ १ ॥
माणिन जटित नूपुर शुभकारी सो छबि कहिय न जाईजी ॥
नंद सुनंदादिक सब जेते दिव्य पार्षद आईजी ॥
कर जोरे ठाढे सब ते ते परिचर्या के माईंजी ॥
भक्तन सहित सुरासर जेते सब ठाढ़े तिहिं ठाईजी ॥ २ ॥

दोहा–माया निज माया सहित, ठाढी जोरे हाथ ॥
अंबरीष प्रहलाद बलि, भक्त भक्त सब साथ ॥
चौ०-भक्त भक्त सब साथ शिव अज सहित सुरन सब आयेजी॥
सनकादिक नारद मुनि ज्ञानी कर जोरे छबि छायेजी ॥
विश्वकर्म धर्म यम काला चंद्र कुवेर सुहायेजी ॥
वंदन करत चरण धर माथा वेदनमें यश गायेजी ॥ १ ॥
कृष्ण प्रभाव प्रगट सब देख्यो सुफलकसुत जलमाईजी ॥
जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी चिंता सकल नशाईजी ॥
मोहिं कृपाकरि दरशन दीनो करि प्रणाम शिरनाईजी ॥
स्तुति करन लग्यो तिहिं ठाई अति आनँद मनमाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

सकल विश्व तुमहीं विस्तारो विश्वरूप तुम्हरो नामी ॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुम स्वामी ॥
टेक–निर्गुण निर्विकार अविनाशी लीला सगुण गुणाकारी ॥
आदि कारण सबहिके तुम सकल विश्व यह विस्तारी ॥
नाग नर सुर असुर अग जग यह लीला तुम्हरीसारी ॥
जाहिं जिहीं विध करो प्रभू तुम माया तुम्हरी अतिभारी
योग यज्ञ अनेक कर्मन रटत तुम्हें श्रीपति स्वामी ॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुम स्वामी ॥१॥
जैसो जाको भाव तैसोई तुम्हहींते सो फल पावै ॥
अतिहि अगाधा अपारी पारनहीं तुम्हरो आवै ॥
शंभु शेष गणेश विधना नेति नेति तुमहीं गावै ॥
भक्तन हित हरि धारि नरतन विविध भांति लीलाभावै॥
मच्छ कच्छ वाराहवपुतुम धरचोरूप जगके स्वामी ॥

अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ २ ॥
होय नरहरि भक्त प्रणकरि सुरहितबपुबावनकीनो ॥
भृगुवंश मणि अभिरामतनुधर मान क्षत्रिनकोहरलीनो
राम रूप निपात रावण राज्यविभीषणकोदीनो ॥
कंस अरी अरु यदुवंश भूषण कृष्ण वपुछविरंगभीनो ॥
बोध कलंकि दशहि निजरूपा म्लेच्छहारि परगटनामी
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ ३ ॥
तव गुण रूप अनंत कृपाला मैं अजान जानत नाईं ॥
यों स्तूती सुफलकसुत करै जोर पद शिरनाईं ॥
तबहिं श्यामसुन्दर सुखदाई अन्तरहित भयेतिहिंठाईं ॥
निकर्‌यो जलते तबै अक्रूर मनहिं में अकुलाईं ॥
लखी कृष्णकी तब प्रभुताई जाने विहारन सुखधामी ॥
अन्तर्यामी नारायण सकल विश्वके तुमस्वामी ॥ ४ ॥

दोहा–चल्यो अक्रूर अति हर्ष मन, आनँद उर न समाइ ॥
भूल्यो जप तप नेम व्रत, वचन कहे नहिं जाइ ॥

चौबोला-वचन कहे नहिं जाय मगन बल राम श्याम रसमाईजी ॥
कहत मनाहिं मन ये अविनाशी पूरण ब्रह्म सदाईजी ॥
हरण करण समरथ भगवाना. इन समान कोउ नाईजी ॥
करिहैं हरि कंसहि निरवंशा यह निश्चय मन आईजी ॥ १ ॥
चल्यो हाँकरथ तब हरषाई नँद उपनन्द मिले आईजी ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं करि सयान मुसकाईजी ॥
कही तात तुम अब हरषाने प्रथम गये मुरझाईजी ॥
कहो सांच हमसों सो बानी तब अक्रूर सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–धन्य धन्य प्रभु श्रीपती, गुणन अगाध अनंत ॥
निगम नेति जिहिं गावहीं, शेष न पावत अंत ॥

चौबोला–शेष न पावत अंत नाथमैं कहां लगि करों बडाईजी ॥
करिकै कृपा जानि निजदासा दियो दरश जलमाईजी ॥
कहा मोहिं बूझतहो स्वामी तुम त्रिभुवनके राईजी ॥
करता हरता आप जगतके सकल लोक सुखदाईजी ॥ १ ॥
कहा कंस कहा मल्ल कुवलिया संशय सकल नशाई ॥
अब करिहौ निर्वंश कंसको यह मेरे मनभाईजी ॥
सुनि मोहन सुफलकसुत वाणी भये प्रसन्न सुखदाईजी ॥
जातचले रथ पर दोउ भाई सन्मुख मधुपुरी आईजी ॥ २ ॥
दोहा–तरण किरण महलन छबिः, जग मग ज्योतिलखात ॥
अक्रूरहि बूझत हरिः, यहै मधुपुरी तात ॥
चौबोला–यहै मधुपुरी तात श्रवणन सुनत रहतहे जाईजी ॥
देखों आज दृगनमें ताई छबि अनूप सुखदाईजी ॥
कंचन कोट कंगूरा मानहुँ बैठे मदन सुहाईजी ॥
बन उपबन पुरके चहुँ पाई मेरे मन अतिभाईजी ॥ १ ॥
लखि लखि हरि मथुराकी सोभा पुलकित मन सुख पाईजी ॥
यहँ जन्मे जिय में करजाने ताते अति हरषाईजी ॥
बाजत नौबाति नृपति दुवारा होत शब्द छबि छाईजी ॥
नगर शोर सुनि रुचि उपजावै अति आनँद मनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ध्वज पताक तोरन कलस, जहँ तहँ ललित वितान॥
मुक्ता झालर झलमलै, को करिसकै वखान ॥
चौ०-को करिसकै वखान श्याम जिहिं निरखि निरखि हरषाईजी
ललित लाल निजकर पल्लवसों बलहि दिखावत जाईजी ॥
भई आज मधुपुरी सनाथा यों अक्रूर सुनाईजी ॥
पति आगम सोहति तिय जैसे तुमहिं विलोकि रहाईजी॥ १ ॥
कसी कोट कटि किंकिणि मानों उपवन बसन रँगायेजी ॥

मंदिर चित्र विचित्र सु जानो भूषण अंग सुहायेजी ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं सो नूपुर ध्वनिलायेजी ॥
धामनध्वजा विराजत हैं इमि जिमि अंचल फहरायेजी ॥ २ ॥
दोहा—कनककलश सोहत जनुः प्रगट कुचन छबिछाइ ॥
उच्चअटन षटऋतु मनहु, आनँद उमँगि भराय ॥
चौबोला—आनँद उमँगि भराई मोखा द्वार दरीची द्वारीजी ॥
लगे विद्रुम कुलिश किंवारा अति छबि आनँदकारीजी ॥
मनहुँ तुम्हारे दरशन लागी नैननरही निहारीजी ॥
मुक्ताझालर खिरकिनराजै हँसति मनहुँ सुकुमारीजी ॥ १ ॥
सोहत मनहुँ श्रवण शुभकारी जहँ तहँ वापी कूपैजी ॥
जनु तुम पंथ निहारत भूली जगमग ज्योति अनूपैजी ॥
नीके रही निहार तिहारो पुरी परम रुचि रूपैजी ॥
असुर कंसको जितिये स्वामी होउ इहांके भूपैजी ॥ २ ॥
दोहा—ललित वचन अक्रूरके, सुनि विहँसे नँदलाल ॥
जाय निकट मथुरा पुरी, पहुँच्यो रथ तत्काल ॥
चौबोला—पहुँच्यो रथ तत्काल नगरके निकट पहूँचे जाईजी ॥
सुफलकसुवन सहित दोउ भाई गौर श्याम सुखदाईजी ॥
कोटिन काम निरखि छबिलाजै कंस दूत लखि धाईजी ॥
समाचार कहि नृपहि सुनाये आये हैं दोउ भाईजी ॥ १ ॥
सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई तुरतहि खड्ग उठायेजी ॥
रंगभूमिके महलन आयो गज मुष्टिक बुलवायेजी ॥
और सुभट सब बोल पठाये तिनसों कहि समुझायेजी ॥
ठांवहिं ठांव रहो सब कोऊ बहुतक ढिग बैठायेजी ॥ २ ॥
दोहा—धनुष पास बहुतक सुभट, राखे तहाँ सजाय ॥
आये कहँलगि देखियो, पूँछत दूत पठाय ॥

चौबोला–पूँछत दूत पठाय कंस सब सैना दई सजाईजी ॥
द्वारे विविधि बाजनेबाजैं डरत मनहिं नृपराईजी ॥
सूखत अधर वदन कुम्हिलायो हृदय रह्यो भयपाईजी ॥
नन्द महरके सुत सुनि आवत मारनकी मनमाईजी ॥ १ ॥
पर्‌यो शोर मथुरा पुरि माईं आवत नन्दकुमारैजी ॥
सुनि धाये सब नर अरु नारी गृहको काज विसारेजी ॥
कोऊ धावन कोउ अटनपर लाज साज डर डारेजी ॥
कोउ धावत कोउ फिरत गलिनमें कोऊ खरी दुवारेजी ॥ २ ॥
दोहा–कियो प्रवेश हरि नग्रमें, असुर निकंदन राइ ॥
इन्दु वदन रथपर दोऊ, गौर श्याम सुखदाइ ॥
चौबो०-गौर श्याम सुखदाइ मुकुट अरु कुंडल अति छबिछाई जी
कुंडल एक राम श्रुति राजै सो छबि बरणि न जाईजी ॥
नील पीत बर बसन निकाईं अरु वनमाल सुहाईजी ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे जावत रथ सँग धाईजी ॥ १ ॥
युगल रूप लखि होय सुखारी इकटक रही निहारीजी ॥
चढ़ीं अटारिन देखहिं गोरी कारि आनँद मन भारीजी ॥
अति आरत दरशनकी प्यासी सुनि सुनि गुण सब नारीजी ॥
शशि आनन मृदु वेस किसोरी लखि चकोर भई सारीजी॥२॥
दोहा–पुलकि गात आनँद भरी, कहति परस्पर वैन ॥
राम श्याम येही सखी, सुनत रही दिन रैन ॥
चौबोला–सुनत रही दिन रैन सखी हम इनकी बहुत बडाईजी॥
नन्द गोपके ये सखि ढोटा गौर श्याम दोउ भाईजी ॥
मणि कंचनके शिखर दोउये कीधों हंस सुहाईजी ॥
प्रगटे हैं सुखदेन ब्रजाहिमें कै त्रिभुवनके राईजी ॥ १ ॥

१ अनेक प्रकारके। २ ओष्ठ। ३ चंद्र। ४ पुत्र।

धनि धनि गोकुल गांव सखी धनि राम श्याम सुखकारीजी ॥
प्रगट प्रीति पाली जिन इनसों धनि धनि ब्रजकी नारीजी ॥
सुनत हुती पुरुषारथ जिनके देखहु नैन निहारीजी ॥
अतिहि अनूप भेष नट सोहै कोटि मदन बलिहारीजी ॥ २ ॥
दोहा—पूर्व जन्म सुकृत[1] कियो, सो फल पायो आय ॥
युगल रूप अभिराम[2] छबि, निरखे नैन निकाय[3] ॥
चौबोला—निरखे नैन निकाय प्रथमहीं इनहीं बकी नशाईजी ॥
शकट तृणा वत्सासुर मारे बका अघा दुखदाईजी ॥
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर लीनो गिरिहि उठाईजी ॥
केशी मार बहाय दियो इन काली द्वीप पठाईजी ॥ १ ॥
धेनुक और प्रलंबा दोऊ सो मारे बल भाईजी ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई लीने इनहिं बुलाईजी ॥
रंगभूमिरचि कियो अखारो कहा धों नृपमन माईजी ॥
जननी[4] धीर धरेधौं कैसे दीने बाल पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा—देहिं अशीश मनाहिं विधि, न्हात न उखरहु बारि ॥
लेति बलैया वारिके, आंचर यह कहि नारि ॥
चौ०-आंचर यह कहि नारि कहाति सब पुनि पुनि पुरकी वामैजी
करिहै इनसों कपट नृपति. तो जैहै ताको नामैजी ॥
देखि दरश इनकोरी आली सफल भये मन कामैजी ॥
देत अशीश सुनाय सकल मिल कुशल जाहु निज धामैजी॥ १॥
एक कहतिमैं सुन्यों सो आली तुमको देत सुनाईजी ॥
ये वसुदेव कुँवर सखि दोऊ लोगन मुख सुन पाईजी ॥
कंस त्रास करि मात पठाये राखे नन्द दुराईजी ॥
अति हितकरि यशुमति पय प्याये तिनके बाल कन्हाईजी ॥२॥

१ पुण्य। २ आनंद प्रद। ३ समूह। ४ महतारी।

दोहा–गौर अंग हारन प्रलंब, कुंडल श्रुति इक बाम ॥
तेहि रोहिणी सुवन अलि, महाबली अभिराम॥
चौबोला-महाबली अभिराम तबहि बलरामहिं नाम धरायाजी ॥
श्याम सुभग तनु उर वनमाला शीश मुकुट छबि छायाजी ॥
जिन्हें हेतु करि सब ब्रजबामा इन सँग नेह निभायाजी ॥
जिनके चरण छुवत बड़ शापी सुगति सुदरशन पायाजी ॥ १॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब गावैं सुमिरतही सुख आवेजी ॥
कहत देवकी सुत सब इनसों कंसहु मन भय ल्यावेजी ॥
आये हैं अक्रूर संग अब मात पिता सुख पावेजी ॥
रंगभूमिरिपुजीत अली ये यदुकुल सुबस बसावेजी ॥ २ ॥
दोहा–अति प्रिय बानी तासुकी, सुनत मुदित पुरनारि ॥
विधिसों ऐसो होय सब, मांगति गोद पसारि ॥
चौबोला-मांगति गोद पसारि देत सुख सबहिन यों सुख दाईजी॥
उतरे जाय बाग इक पावन सहित नंद दोउ भाईजी ॥
तब सुफलकसुत सों हरि भाष्यो कहहु तात तुम जाईजी ॥
आये श्याम राम दोउ भाई कंसहि देहु जनाईजी ॥ १ ॥
बहुरि नृपति जब हमहिं बुलैं हैं तब हमहूं तहाँ आईजी ॥
तब अक्रूर जोरि युग पाणी. विनती हरिहि सुनाईजी ॥
मुहि न्यारो क्यों करत गुसाईं राखहु चरणन माईंजी ॥
निज सेवक अपनो करि मानो कंस दूत मैं नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–अब पावन हरि कीजिये, चलि मेरो निजधाम ॥
ऐहौं तुम्हरे एक दिन, हँसि बोले घनश्याम ॥
चौबोला–हँसि बोले घनश्याम ऐसे कहि दिये अक्रूर पठाईजी ॥
विदा होय चले सुफलकसुत गये जहां नृपराईजी ॥
रथते उतरतही दोउ भाई लीने ग्वाल बुलाईजी ॥

गये यमुन तट नगर निवासा सखन सहित सुखदाईजी ॥ १ ॥
बाल वैस शोभित दोउ भाई बालहि सखा सुहावैजी ॥
गौर श्याम शोभा लखि सुन्दर कोटि मदन बलिजावैजी ॥
अतिहि पवित्र चरित्र हरीके सो विहारन को पावैजी ॥
अमित गुणनकी खान दुष्टदल भक्तनके मनभावैजी ॥ २ ॥

अथ रजकवधलीला।

दोहा–नृपति रजक धोवै वसन, आवत लखि नँदलाल ॥
हँसत कहत मन गर्व ये, कंसराय उर शाल ॥
चौ०-कंसराय उर शाल रजक यों आपुसमें बतरावैजी ॥
बहुत अचकरी करि ये आये लघु लघु वैस लखावैजी ॥
जो कोउ दनुज जात इन पाईं तो ये तुरत नशावैजी ॥
अति खोंटो जिहि नाम कन्हाई अब नृप याहि मरावैजी ॥ १ ॥
है बलभद्र महा अतिखोटो सोऊ बली बतायाजी ॥
ताऊको मारेगो राजा याही काज बुलायाजी ॥
प्रभु अंतर्यामी सोइ जानी जो वे सब बतरायाजी ॥
ग्वालन सहित गये तिन पाईं हरि मुख वचन सुनायाजी ॥ २ ॥
दोहा–कह्यो वसन कछु हम चहैं, पुनि तुम देहैं आय ॥
तिनहिं पहर हम नृपति पै, आवत तहँलोंजाय ॥
चौबोला–आवत तहँ लोंजाय नृपति सो जो पहरावन पाईजी ॥
तामें ते कछु तुमको देहैं ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
कै पहिलेही लेहो हमसों कहो सोइ समझाईजी ॥
हँस्यो सुनतही हरि मुख वाणी कह्यो वचन गरबाईजी ॥ १ ॥
होय रहेहो बलिके बकरा माँगत वसन निकाईजी ॥
है आवहु तुम नृपति द्वार लों राखन घरिहि बनाईजी ॥

जो भावे सोई तब दीजो जब लीजो पट आईजी ॥
अहिर जात कामरी उढैया बन बन चारत गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–नटको भेष बनायके, चले नृपतिके पास ॥
नृपति वसन पहरन चहै, पहरावनिकर आस ॥
चौबोला–पहरावनिकर आश आश तुम जीवनकी अब चावौजी
खोवत चहत अबहिं पुनि सोऊ अब जीवत नाहिं जावौजी ॥
यह सुनि श्याम कह्यो पट देहू तुमहिं भलाई पावौजी ॥
हम माँगत हैं सहजहि तुमसों तुम काहे सतरावौजी ॥ १ ॥
सहज बातको रिस नाहिं कीजै ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
ये नृप बसन नहीं तुम जाने बोल्यो रजकरिसाईजी ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारै नन्दहि बन्दि रखाईजी ॥
जाहु चले ह्यां ते अब नीके कैमारो इहि ठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–करत अचकरी मोहिं सों, नियरायो कहा काल ॥
कंस दुहाई कहत हों, दुहुँन मारिहों हाल ॥
चौबोला–दुहुँन मारिहों हाल सुनतही कियो श्याम सो ख्यालैजी
पकरि भुजा पटक्यो तत्कालै जनहित दीनदयालैजी ॥
तुरत गयो तनु त्यागि स्वर्गको कीनो रजक निहालैजी ॥
जन्म मरण ते रहगयो सोऊ ऐसो गुण गोपालैजी ॥ १ ॥
संगी ताके सबहि रजक सो लखिके गये पराईजी ॥
श्याम प्रथमही वसन नृपतिके लीने सबन लुटाईजी ॥
रजक मार सब वसन लिये हरि दिये ग्वाल पहराईजी ॥
विविध रंग बहुभांति नवीने जो जाकी रुचि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–चले तहां ते हर्षि सब, मिल्यो दरजि इक आइ ॥
प्रभुहि देखि अति हरष मन, रह्यो चरण शिरनाय ॥
चौबोला–रह्यो चरण शिरनाय जोर कर हरिसों विनय सुनाईजी

घाट बाढ जे वसन हुते ते दीने सुभग सजाईजी ॥
ताकी कृतहि मान प्रभु लीनो अभयदान दियो ताईजी ॥
पुनि इकमाली हतो सुदामा गये तहां सुखदाईजी ॥ १ ॥
तुरत आय तिन पद शिरनायो युगल निरखि सुखपायेजी ॥
आदर सहित सदनमें आने चरण धोय बैठायेजी ॥
नृपति हेतु जे हार बनाये प्रेम सहित पहरायेजी ॥
हाथ जोर बहु विनय सुनाई जै जै कहियशगायेजी ॥ २ ॥
दोहा–मोपै बहुत कृपाकरी, दीनबंधु भगवान ॥
सुनि सप्रेम ताके वचन, रीझे श्याम सुजान ॥
चौबोला–रीझे श्याम सुजान भक्तिको दियो दान हरिताईजी ॥
बहुरि चले आगे अति हर्षित सखन सहित दोउ भाईजी ॥
तहां पंथमें कुबजा दासी लै चंदन मिलि आईजी ॥
निरखि श्याम छबितन सुधि भूली बोली अति हरषाईजी ॥१॥
हो प्रभु दीनबंधु सुखदाई तुमहित चंदन ल्याईजी ॥
चरचों अंग तुम्हारे चंदन यह मेरे मन माईजी ॥
नृपके उर चंदन नित लाऊं कुबजा नाम कहाईजी ॥
मो जियको संताप नशायो प्रगट दरश दियो आईजी ॥ २ ॥
दोहा–अब ये मलैयज लीज़िये, कृपासिंधु सुखधाम ॥
पूरण कीजै नाथ मम, सफल मनोरथ काम ॥
चौबोला–सफल मनोरथ काम सुनतही अंतर्यामि कन्हाईजी ॥
भावभक्त कुबिजा पहिचानी हरिजनके सुखदाईजी ॥
भावहिके वश त्रिभुवनराई कुब्जा निकट बुलाईजी ॥
रही श्याम छवि निरखि लुभाई पूजे हित दोउ भाईजी ॥ १ ॥
हेतु बहुत इन हमसों राख्यो बलि सों कहत कन्हाईजी ॥

१ वस्त्र। २ चंदन। ३ कामना।

हमहूं हेतु करैं कछु यासों सूधी देहुँ बनाईजी ॥
पग राख्यो पग पीठ छुवायो धरचो शीश करमाईजी ॥
नेक उठाय चिबुक गहि लीनी भई रूप अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाहि बनाई आप हरि, को करिसके बखान ॥
कुबजा मन आनंद अति, भई रूप गुणखान ॥
चौबो०–भई रूप गुणखान सुन्दरी अति हरषित मनमाईजी ॥
महाकुरूप कूबरी तैसी अब लखि रतिहि लजाईजी ॥
मिले मोहिं मोहन पति जानो यह कुबजा मन ल्याईजी ॥
पुनि पुनि कमल चरण शिरनाई बहु विधि विनय सुनाईजी॥ १॥
कीनी मम अति कृपा कृपाला सदन चलहु सुखदाईजी ॥
अपने चरण कमल तहँ धरिये करहु सफल मनसाईजी ॥
कंस देखि ऐहौं तुम धामा ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
चले धनुष देखन दोउ भाई कुबजा सदन पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ग्वाल सखा सब सुभग सँग, सजी सैन मनु काम ॥
चढ़ीं अटारिन सो छवी, निरखत हरिकी बाम ॥
चौबोला-निरखत हरिकी बाम अनूपम इन्दु बदन छवि छाईजी॥
जनु पुर उदधि तरंग अपारा सोछवि वरनि नजाईजी ॥
भई सुन्दरी कुविजा दासी कह सब लोग लुगाईजी ॥
अंग सुधार रूप बर दीने चेटक कियो कन्हाईजी ॥ १ ॥
रजक मार सब बसन लुटाये कुवजा सुभग बनाईजी ॥
बाल भाव ये मोहत मनहीं प्रगटे देव कोउ आईजी ॥
पुरुषारथ इनके सुखदाई निशि दिन हम सुन पाईजी ॥
तैसेइ देखे नैन विहारन सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गये धनुपशाला दोऊ, देखि चकित भट भीर ॥
आतुर शस्त्र सँभारि सब, निरखि रहे दोउ वीर ॥

चौबोला-निरखि रहे दोउ वीर धनुष ढिग ठढे असुर समुदाईजी॥
अति बल बीर धीर रण गाढे बोले सुनहु कन्हाईजी॥
सुनियत अति बल भुजा तिहारी धनुष चढ़ावहु आईजी॥
कहा करत हमसों ये हांसी बोले हरि मुसकाईजी॥ १॥
कहां धनुष अति गर्व कठोरा हम बालक दोउ भाईजी॥
शूरवीर ठाढे सब जेते ये कोउ डंड चढाईजी॥
खेलन कहौ खेल कछु हमसों सो हम तुमहिं दिखाईजी॥
ऐसे श्याम हँसत इत तिनसों उत सुफलक सुत जाईजी॥ २॥

दोहा-समाचार अक्रूर सब, कहे नृपतिसों जाय॥
आये हैं भैया दोऊ, सहित महर नँदराय॥

चौबोला-सहित महर नँदराय कह्यो पुनि घर अक्रूर सिधायाजी
रजक जाय तिहिं काल पुकारे सुनहू श्रीनृपरायाजी॥
मारे बिन दूषणहिं हमें दो बालक नँदके आयाजी॥
लिये बसन सब लूटि तिहारे ग्वालनको पहरायाजी॥ १॥
सुनतहि उव्यो रिसाय भूप तब बोल्यो सबन बुलाईजी॥
देखो ये अति ढीठ नंदके प्रथम करी यह आईजी॥
अब मारों अवश्य दोउभाई सब ब्रज देहुँ लुटाईजी॥
नंदहि देहुँ बंदिमें आनी गये अहीर इतराईजी॥ २॥

दोहा-मैंजु बुलाये प्रीति कर, मारयो रजकहि आय॥
असुर जाय गहि ल्याहु अब, देखहु जान न पाय॥

चौबोला-देखहु जान न पाय नन्दके बालक वे दोउ भाईजी॥
ऐसे कंस कहत रिसहाई दूतन खबर जनाईजी॥
कुबजासों चंदन हरि लीनों दियो रूप अति ताईजी॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई यह सुनि गयो झुराईजी॥ १॥
बहुरि धीरधर असुर पठाये कह्यो श्यामसों जाईजी॥

पहले तोरि धनुष गोपाला बहुरो भूप बुलाईजी ॥
सुनि असुरनके वचन कृपाला बोले मन मुसकाईजी ॥
याहीको नृप हमाहिं बुलाये कियो वैर यह पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—गहन लगे जब असुर सब, हरिको बालक जानि ॥
तबहिं श्यामसुन्दर सुखद, कछु इक उर रिस आनि ॥
चौ०-कछु इक रिस उर आन पाणि गहि तुरतहि असुर पछारेजी ॥
तुरतहि लियो उठाय धनुषको तोरि टूक करडारेजी ॥
तबहिं क्रोध करि उठ सब योधा मारहि मार पुकारेजी ॥
नन्दसुवन रणवीर धीर हरि असुर सकल संहारेजी ॥ १ ॥
एकहि झटक एकही पटकत एक जहाँ तहँ धावैजी ॥
ताल चटकत चमकि झटकत लखत नट छबि छावैजी ॥
एकहि पकरि फिराय पटकत भाजि सो नृपपै जावैजी ॥ २ ॥
दोहा—ख्यालहि मारे असुर सब, तोर धनुष नँदलाल ॥
चले सामने पवाँरि तकि, जहाँ कुवलिया ख्याल ॥
चौ०-जहाँ कुवलिया ख्याल चले तहँ अति हर्षित दोउभाईजी ॥
ब्रह्मादिक सुरसिद्ध मुनीशा देखत नभ समुदाईजी ॥
विहारन प्रभुपर अति मन हरषित सुरन सुमन झरिलाईजी ॥
रंगभूमि हरि हलधर आये संग सखा छवि छाईजी ॥ १ ॥
रवि शशि उडुगण उदित सुहाये निज निज छवि दरशावैजी ॥
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढो मानहुँ गिरि चल आवैजी ॥
कंध केसरी गर्वप्रहारी बलि तन लखि मुसकावैजी ॥
ताक्षणकी छवि कहत न आवै कटि सों पट लपटावैजी ॥ २ ॥
दोहा—श्माम सुभगतन छवि बनी, पाग सँभारत जात ॥
मधुपुरकी युवती सकल, कहति परस्पर बात ॥
चौबोला—कहति परस्पर बात लखहु सखी अंग अंग छबिछाईजी

रूपराशि मनहरण कन्हाई अति छबि वरणि न जाईजी ॥
कोटि मदन छबि विधि लुन लीनी तब यह मुरति बनाईजी ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागी निशदिन प्रेम लगाईजी ॥ १ ॥
होयँ हमारे सुकृत आजतौ देखैं नैन भराईजी ॥
जैसे तोरयो धनुष हरीने तैसे गजहि नशाईजी ॥
अति कोमल नँदलाल निहारी सुरन मनावत जाईजी ॥
मात पिताके पुण्य ते आली बचहु कुशल दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–देखि कुबलिया द्वारपर, तब बलि कहो पुकारि ॥
सुनहु महावत गजहि तुम, लेहु द्वारते टारि ॥

चौबोला–लेहु द्वारते टारि हमें अब जान देहु नृप पाईजी ॥
नातर ह्वैहै गजको नाशा कहत तोहिं समुझाईजी ॥
कहे देत नहिं दोष हमारो वारो नाहिं कन्हाईजी ॥
त्रिभुवनपति दुष्टन संहारी धरणी भार नशाईजी ॥ १ ॥
सुनत बोल गजपाल रिसायो जानत हमहुँ बड़ाईजी ॥
त्रिभुवन पति अब गाय चरावैं अटके गजसों आईजी ॥
वादत बड़े शूरकी नाईं जैहै प्राण क्षण माईंजी ॥
तोरयो धनुष मनहिं गरवायो जानत गजको नाईंजी ॥ २ ॥

दोहा–दशसहस्र गजको बली, ऐरापति भयमान ॥
जब यासों लरिलेहु तब, भीतर पैहो जान ॥

चौबोला–भीतर पैहो जान ऐसे कहि लै अंकुश करमाईंजी ॥
गज गजपाल सामुहे कीनो तब बलिको रिस आईजी ॥
सुनरे मूढ कुजात बात तू मुख सँभारि कहि नाईजी ॥
गज समेत पटकों अब तोहीं काल निकट नियराईजी ॥ १ ॥
यह सुनि गज गजपाल चलायो झटकि सूँडगज धायोजी ॥
लीनो लपकि सूँडके माईं सो सबहिन लखिपायोजी ॥

जब बलराम कोप करिभारी मूका एक लगायोजी॥
तब समेटकर कूक लगाई सब मद रंध्र सुकायोजी॥ २॥
दोहा—तुरत उचकि न्यारे भये, लखत असुर समुदाइ॥
हँसत भ्रात दोऊ खडे, महावत रह्यो लजाइ॥
चौ०-महावत रह्यो लजाइ थकित भयो हाथी जब तिहिठाईजी॥
तब मनमें गजपाल डरायो इनसों नाहिं बसाईजी॥
जो ये बालक वधे न जाई मुहिं मारै नृपराईजी॥
अंकुश मसक शीशपर लायो चाहत गजहि चलाईजी॥ १॥
बहुरि गयंदहि तातो कीनों भयो क्रोध मनमाईजी॥
गंडस्थल मद अंबु चुचायो चाहत अबहिं नशाईजी॥
पवन वेगते आतुर आयो परचो दुहुँनपर धाईजी॥
महाकोपगहि श्याम रह्यो तब दशन धरणि सों लाईजी॥२॥
दोहा—डरप उठे तिहिं काल सब, सुर मुनि पुर नरनारि॥
दुहूँ दशनविच ह्वै कढे, बल निधि प्रभु दैतारि॥
चौबोला—बलनिधि प्रभु दैतारि उठे हरि गजके संग मुरारीजी॥
देखि चरित सब श्यामसुन्दरके तुरतहि भये सुखारीजी॥
ख्यालहिं हांक दई हरि सुनि गज कियो कोप मन भारीजी॥
झटकि सूंड बहुरो गज धायो आयो जित बनवारीजी॥१॥
रहे उदर तर दबकि मुरारी देखत गज तहां नाईजी॥
पाछे प्रगटि बहुरि हरि टेरचो आगेते बल भाईजी॥
चकित भये देखत सब कोऊ रहे दोउ गजहि खिलाईजी॥
चहुँघां फिरत चक्रकी नाई सूंड पूंछ छूजाईजी॥ २॥
दोहा—नेक न अवसर पात गज, चहुँदिशि हरि फिरजात॥
गजरिस विकल भयो अतिः, इन्हें न कछु रिस गात॥
चौबो०-इन्हें न कछु रिस गात करत मन घात न कछु बनिआईजी

जों बालक बछरन सँग खेलै पूंछ पकारि करमाईजी ॥
भजत मारिकै मुष्ट गँभीरै इत उतते दोउ भाईजी ॥
कबहुँ उदरतरह्वै कढिजाई नेक छुवन नहिं पाईजी ॥ १ ॥
नील पीतपट कटि फहरावै चपल नैन छबिछाईजी ॥
खेलत गज सँग चंचल दोऊ अति छवि बरनि न जाईजी ॥
मनहुँ श्याम सुन्दर गजके सँग निर्तत मदन सुहाईजी ॥
खैंचत कबहुँ पूंछ हरि गहिकर कबहूं देत हटाईजी ॥ २ ॥

दोहा–देखि द्विरद पुर नारि नर, विधिहि मनावत जाइ ॥
वेगहि मारैं श्याम गज, तो हम लखि सुखपाइ ॥

चौबोला-तो हम लखि सुखपाइ महावत अंकुश बहुरि लगायाजी
तब हरि गहि गज पूंछै पटक्यो नेकहलन नहिं पायाजी ॥
लीने खैंच मृणाल दोउरद सुरन सुमन बरषायाजी ॥
विहारन जन लखि अति मन हरषे असुर न सकल डरायाजी॥ १॥
हँसतहि मारचो द्विरद कुवलिया महाप्रबल घनश्यामाजी ॥
सखन सहीत मुदित तहँ ठाढे छबि निरखत पुरबामाजी ॥
जहँ तहँ कहत यहै सब कोऊ मारचो गज बलरामाजी ॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात विहारन जनहित सुखके धामाजी ॥ २ ॥

अथ मल्लयुद्ध लीला।

दोहा–चले हरी जहँ मल्लसब, द्विरद दन्त धरि कंध ॥
गौर श्याम सुन्दर सुखद, अति छवि श्रीनँदनंद ॥

चौबोला-अति छवि श्रीनँदनंद कमल मुख शोभा परम सुहाईजी
छबि अपार बलनिधि गंभीरा संग सखा छबि छाईजी ॥
सुनत कंस जिमि नव खग पिंजर रह्यो अतिहि अकुलाईजी ॥
भाजनको मन माहिं विचारो सक्यो न भाज लजाईजी ॥ १ ॥

गये रंगभूमी मनमोहन यथा भाव दरशायाजी ॥
उठे संकि सब मल्ल अहीरै लखि बल सकल डरायाजी ॥
दुष्टर दैत्य हुते तहँ जेते रूप भयान लखायाजी ॥
कंस समीप भूप जे तिनको राज वंशि मन भायाजी ॥ २ ॥

दोहा—साध सिद्ध देखहिं शुभग, इष्ट देव सुखधाम ॥
देखे सुरगण मगन मन, जनहित पूरण काम ॥

चौबोला—जनहित पूरण काम हरी देवनके देव मुरारीजी ॥
ग्वाल बाल देखत सब ऐसे सँग खेले बनवारीजी ॥
महलन ते देखैं सब हरिको सकल सुन्दरी नारीजी ॥
कोटि काम शोभा हरण प्रभु नवकिशोर शुभकारीजी ॥ १ ॥
देखत अति विपरीत कंस नृप नँदको कुँवर कन्हाईजी ॥
कंप उठ्यो भयभीत कंसको प्रगट काल दरशाईजी ॥
अबलहि अबल बलहि बलवाना सर्वभाव सुखदाईजी ॥
ललिताहि ललित साधुको साधू छलन छली गुण माईजी॥२॥

दोहा—जो जन जैसे ध्यावही, तैसोइ दरश दिखाइ ॥
कहत परस्पर देखि सब, येही कुँवर कन्हाइ ॥

चौबोला—येही कुँवर कन्हाई ढोटा नन्द महरके जायेजी ॥
रजक मारि नृप वसन लुटाये कुबजा अंग बनायेजी ॥
धनुष तोरि हाथी इन मारचो असुर समूह नशायेजी ॥
धरे कंध गजदन्त विराजैं बालक संग सुहायेजी ॥ १ ॥
जिनके वश सब भूमि अकाशा लखत असुर समुँदाईजी ॥
लीने घेरि कंस भय मानी तब चाणूर सुनाईजी ॥
सुनतहुते बहुनाम तिहारो आवहु इतहि कन्हाईजी ॥
हारि जीति काहू नहिं जानी सब तुम बलहि बताईजी ॥ २ ॥

१ धोबी। २ सम्पूर्ण।

दोहा–कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमें खेलसों काम ॥
चौबोला–हमें खेलसों काम बात यह कहा तुमरे मनआईजी ॥
यह अपुगति व्यवहार कहां तुम हम बालक दोउ भाईजी ॥
जान देहु हमको नृपपाई कतरोकत मग माईजी ॥
नृप हमको करहेतु बुलाये यह तुम कहा सुनाईजी ॥ १ ॥
तुमको बालक कहिये कैसे मल्लन वचन सुनायाजी ॥
किये कर्म ब्रजमें तुम जैसे लखे न कहुँ सुन पायाजी ॥
गिरि गोवर्द्धन करपै धारयो काली द्वीप पठायाजी ॥
कैयक असुर बीरबल भारे खेलहि सकल नशायाजी ॥ २ ॥
दोहा–सो बल अब हम देखिहैं, तबहीं पैहोजान ॥
देखि कंस भैया दोऊ, लग्यो अतिहि अकुलान ॥
चौ०-लग्यो अतिहि अकुलानयुँ कहि कहि बारहि बार पठावैजी ॥
क्योंरे सकुच करत मन माई क्यों नहिं शत्रु नशावैजी ॥
मल्लनको बहुत्रास दिखावै जो न वधे ये जावैजी ॥
करों सकुल तो नाश तुम्हारो नाम रहन नहिं पावैजी ॥ १ ॥
नृप सँदेश सुनि मल्लडराने कियो कोप नृपराजैजी ॥
रहे सकल सकुचाय मनहिंमन कहत परस्पर लाजैजी ॥
नोन नृपतिको मान सकल मिल नन्द सुवनसों आजैजी ॥
लरिमरिये कै मारिये ताको करैं कंसको काजैजी ॥ २ ॥
दोहा–अब विलंब नहिं कीजिये, लेहु सुयश नृपपास ॥
बोलउठे तब मल्लसब, कछुक क्रोध कछु त्रास ॥
चौबोला-कछुकक्रोध कछुत्रास हमहिं सों लरत श्यामक्योंनाईजी
घाट न कछु हमते बलमाई लरहु आज दोउ भाईजी ॥
पशुपालक तुम कुँवर कन्हाई जीते पशुहि खिलाईजी ॥

अबलगि नाहिं मल्ल कोउ भेटे अबतो परे फँदआईजी ॥ १ ॥
मल्लयुद्ध तुमसों हम करिहैं नृपको काज बनावैजी ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं लै रज अंग चढ़ावैजी ॥
ठोंकैं ताल गाज जों गरजैं लरिहैं अब यह चावैजी ॥
डारहु मार उभै सुकुमारा आपुसमें बतरावैजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि सुनि हरि हलधर दोऊ, बोले पुनि मुसकाइ ॥
सुनिये हो अब मल्ल सब, यह तुमरे मन आइ ॥

चौबोला–यह तुमरे मन आइ नृपति पै जान देहो हमेंनाईजी ॥
बड़ो सुयश हमसों लरि लेहो तुमरे मन यह भाईजी ॥
निपट खोज अब परे हमारे कहा तुमरे मन माईजी ॥
हम कहा कहैं करो तुम जोई सो तुम्हरे मनआईजी ॥ १ ॥
जबहिं श्याम ऐसे कहि वाणी विलखि उठीं सब नारीजी ॥
देखोरी ये मल्ल उभय भैयन चाहत हैं मारीजी ॥
बांचै कैसेहूँ दई अब अति कोमल छबि भारीजी ॥
क्यों जननी पठये इनको इहां कहत नैन जलडारीजी ॥ २ ॥

दोहा–लोभ लागि पठये इहां, निठुराहि जाति अहीर ॥
कियो कहा अज्ञान उन, अति बालक दोउवीर ॥

चौबोला–अति बालक दोउ वीर होतधौं कैसी अबइह ठाईजी ॥
करत कंस अब बात अनैसी कहा नृपके मनमाईजी ॥
कहत सबै हमको यह भावै करहू विधिहि सहाईजी ॥
तोरयो धनुष हन्यो गज जैसे तैसेहि मल्ल नशाईजी ॥ १ ॥
जोर जोरकर विधिके आगे आंचर छोर मनायोजी ॥
तब चाणूर कृष्ण पै आये हरि कटि पट लपटायोजी ॥
भुज भुज जोरि भये तहाँ ठाढे तकि तकि दाँवचलायोजी ॥
ऐसेइ मुष्टिक अरु बलरामा भिरे युद्ध ठहरायोजी ॥ २ ॥

दोहा—लरत वीर दोऊ तहाँ, देखत सुर समुदाइ ॥
कटि कछनी अरु पीत पट, अति छबि परम सुहाइ ॥
चौबोला—अति छबि परम सुहाइसु चंदन चित्रित सो छबिछाईजी
वृषभ कंध उर बाहु बिसाला छबि वरनी नहिं जाईजी ॥
शिरसों शिर भुजसों भुज जोरे दृष्टि सों दृष्टि मिलाईजी ॥
चरण चरण सों लपट झपटिके लटकि झपट झटकाईजी ॥ १ ॥
छूटि जात लपटात बहुरितन घात गहन नहिं पाईजी ॥
तिन्हें मल्ल चाहत गहन सो शिव विधि पै न गहाईजी ॥
श्याम सहज मल्लन सों खेलें पकरि पकरि छट काईजी ॥
भये प्रथम कोमल तनु मोहन सिथिलरूप सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तब चाणूर अपने जिये, रह्यो गर्व उर आनि ॥
हरिके बलको तुच्छही, लियो मनहिं मन जानि ॥
चौबोला—लियो मनहिं मन जानि हरीके मुष्टी एक लगाईजी ॥
तुरतहि कियो वज्र सम तनु हरि फूल समान लखाईजी ॥
तिन मारयो अपने जियजान्यो भयो हरष मनमाईजी ॥
कहन लग्यो मुरि अहिर पछारयो हँसतहि लरयो कन्हाईजी १॥
परयो सोच प्राणनते भारी हरिकी महिमा पाईजी ॥
निश्चयमौत आपनी जानी दई हांक सुखदाईजी ॥
जनु गजको मृगराज पुकारयो सुनि गयो दाँव भुलाईजी ॥
थर थराय चाणूर डरायो धरयो धाय कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—पटक्यो महि गहि चरण तब, हरि चाणूर फिराय ॥
भयो शब्द आघात सुनि, रह्यो कंस भय पाय ॥
चौबोला—रह्यो कंस भय पाय निरखि पुर नर नारी सुखपायोजी
अति आनन्द भये नभ सुरगण मन मनहरष बढ़ायोजी ॥
पकरि तबहिं बलराम मुष्टिकहि तुरतहि मार गिरायोजी ॥

कहत धन्य धनि लखहिं सबै नभ सुरनर जयति सुनायोजी ॥१॥
औरहु जे अति मल्ल आदिसब जुरे हते इकठौरेजी ॥
ते तव नन्दसुवन सब मारे लपटि झपटि झकझोरैजी ॥
जब मारे हरि मल्ल सबहि तब परचो कटक में सोरैजी ॥
जिमि तारागण रविः उदै सब छिपे असुर चहुँ ओरैजी ॥ २ ॥

अथ कंसासुरवधलीला ।

दोहा–रंगभूमि राजत खरे, सखन सहित दोउवीर ॥
विहारनको प्रभु नन्दसुत, हरण भक्त भय पीर ॥
चौबोला–हरण भक्त भय पीर जबहिं हरि लिये मल्ल सबमारीजी
चले असुर तब सब जियहारी देखि बली बनवारीजी ॥
लखत कंस अति भयो दुखारी देत सबनको गारीजी ॥
कहत गये कितरे सब योधा कियो क्रोध मन भारीजी ॥ १ ॥
डारहु मारि नन्दसुत दोऊ ऐसे सबन सुनावेजी ॥
तनक छोहरा अहिरन केरे मेरे मल्ल नशावेजी ॥
डर नाहीं करत चले इत आवें देखहु जान न पावेजी ॥
असुर बीर अपनी सर जेते लैलै नाम पठावेजी ॥ २ ॥
दोहा–द्वारपाल सों कहत नृप, लेहु कपाट लगाय ॥
नृप भय माने असुर सब, चले शस्त्र लै धाय ॥
चौबोला–चले शस्त्र लै धाय देखि सब विकल भये नरनारीजी ॥
मन मन देत कंसको गारी कहत कठिन भई भारीजी ॥
बचहु श्याम सोइ करहु विधाता लखे असुर गिरिधारीजी ॥
भिरे हांक दै दै दोउ बीरा असुरन ओर निहारीजी ॥ १ ॥
मानहुँ गजगण निरखि केहरी तिनके ऊपर धायेजी ॥
सुनत शब्द गंभीर हरीको असुर समूह डरायेजी ॥

लपकि गहि माहि पटकि जहाँ तहाँ सकल दनुज नशायेजी ॥
गौर श्याम शोभित अति सुन्दर असुरन बीच सुहायेजी ॥२॥
दोहा–जात नहीं बरणी छवी, पटकत इत उत धाय ॥
भूमी भार अपार हारि, असुरन करहि नशाय ॥
चौबोला–असुरन करहि नशाय खलभलो परयो नग्रके माईजी
पुनि पुनि मंत्रिन बोल पठावे कहत कंस नृपराईजी ॥
जियत जायँ नाहिं बंधु दोऊ ये सोई करहु उपाईजी ॥
ब्रज में कोऊ रहन न पावे मारहु नन्द बुलाईजी ॥ १ ॥
पुनि वसुदेव देवकी मारो जीवत छोरो नाईजी ॥
बहुरो उग्रसेनको मारो पिता दोष नाहिं ल्याईजी ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे लिये खड्ग कर माईजी ॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा हने असुर दोउ भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–आति बल ढोटा नन्दके, लखे कोप नृप ओरि ॥
गये मचान मचकि दोऊ, बाज झपट जिमि दौरि ॥
चौ०-बाज झपट जिमि दौरि ह्वै गयो चकित नृपाति तिहिं ठाईजी
आयो काल निकट पहँचान्यो रह्यो सोच मन माईजी ॥
रहि गयो लिये खड्ग कर माईं मारसक्यो सो नाईंजी ॥
तबहीं श्याम लात इक मारी गिरयो मुकुट महि जाईजी ॥१॥
दीनो ठेलि मंचते भूपर कूदे आप कन्हाईजी ॥
तहाँ चतुर्भुज रूप दिखायो सो स्वरूप दियो ताईंजी ॥
निज स्वरूप दे स्वर्ग पठायो भक्तनके सुखदाईजी ॥
मारयो कंस कहत सब वाणी जय जय ध्वनि सुरगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जय जय ध्वनि सुर करत नभ, सुमनन झरी लगाइ ॥
कहत कंस मारयो हरी, तीन भुवन सुन पाइ ॥
चौबो०–तीन भुवन सुन पाइ स्तुती ब्रह्मादिक सुर गाईजी ॥

भूमि सुर उपकार हित हरि प्रगटे त्रिभुवन राईजी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे धन्य कंस नशाईजी ॥
परसितन अनुपम लई गति महिमा वरणि न जाईजी ॥ १ ॥
धन्य अखिल ब्रह्मांड नायक जन हित तनुधर आयेजी ॥
धन्य धन्य प्रभु ब्रजवासिनको प्रेम विवस करि पायेजी ॥
करि स्तुति पुनि पुनि मन हरषित सुरन सुमन बरषायेजी ॥
मुदित बजावत दुन्दुभि सब मिल जय जय कहि यश गायेजी॥२

दोहा—अति प्रफुलित सबको हियो, मथुरा पुर नर नारि ॥
विकसत हरि शशि मुख निरखि, मनहुँ कुमुद बनचारि

चौ०मनहुँ कुमुद बनचारि कंसको मारयो तब गिरिधारीजी ॥
भ्राता अष्टतासु बलवाना कियो क्रोध मन भारीजी ॥
करि करि कोप युद्धको धाये दिये हलधर ते मारीजी ॥
बहुरि केश गहि कंस मुरारी दियो यमुन में डारीजी ॥ १ ॥
कीनों कछुक तहाँ विश्रामा हरि जनके सुखदाईजी ॥
भयो विश्राम घाट तिहि नामा महिमा परम सुहाईजी ॥
सुनि पति मरन कंसकी नारी भ्रातन सकल लुगाईजी ॥
रुदन करत करि विविध विलापा सुमिर रूप नृपराईजी ॥

दोहा—भयो दुखहि तिनको अती, मरन चहत पति साथ ॥
करुणामय कोमल सुखद, गये तहाँ दोउ भ्रात ॥

चौबोला—गये तहाँ दोउ भ्रात सबन तब करि प्रबोध सुखदाईजी॥
रहीं मरनते सुनि प्रभु वाणी बहुत भांति समुझाईजी ॥
आये महल द्वार दोउ भाई उग्रसेन सुन पाईजी ॥
सुनतहि तुरत चल्यो उठ धाई परयो चरणमें आईजी ॥ १ ॥
त्राहि त्राहि कर वचन सुनायो रह्यो चरण शिरनाईजी ॥

१ फूलत। २ पंकज। ३ ज्ञान। ४ रक्षा।

क्षमा करहु करुणानिध स्वामी प्रभु त्रिभुवनके राईजी ॥
मारे असुर कंस सब भ्राता उचित करी सुखदाईजी ॥
खलन दलन हित यंह अवतारा लीनों आय कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कीजै अब पालन प्रजा, दीनबंधु सुख साज ॥
सिंहासन बर बैठ प्रभु, करहु मधुपुरी राज ॥

चौबोला—करहु मधुपुरी राज सुने जब दीन वचन सुखदाईजी ॥
तबहीं उग्रसेन को मोहन लीनो हरषि उठाईजी ॥
पुनि पुनि कहि बहु विधि सन्मान्यो लीनो हृदय लगाईजी ॥
पुनि करजोर कह्यो श्रीमुखसों सुनहु श्री नृपराईजी ॥ १ ॥
यदुवंशिनको शाप ताहिते राज्य उचित हमें नाईजी ॥
करहु देव तुम राज्य दूर सब संशय देहु मिटाईजी ॥
हम करिहैं सब काज राजको तुमरी आयसु पाईजी ॥
जो नहिं मानें आन तुम्हारी देहिं दंड हम ताईजी ॥ २ ॥

दोहा—और सोच नहिं कीजिये, जियमें कछु अरु लाज ॥
प्रजा लोग सुख दीजिये, नीत सहित करराज ॥

चौबोला—नीति सहित करराज यादवः जिते कंस भय पाईजी॥
गृह ताजि तजि भजिगये प्रबासा तिनको लेहु बुलाईजी ॥
सबको मथुरा मांझ वसावो रहैं सदा सुख माईजी ॥
विप्र धेनु सुर पूजन कीजै इनकी करहु सहाईजी ॥ १ ॥
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये सिंहासन बैठाईजी ॥
निजकर चमर लिये दोउ भाई शिरपर छत्र रखाईजी ॥
राखत जनकी सदा बड़ाई प्रभु भक्तन सुखदाईजी ॥
वर्षि सुमन सुर कहत सुखारे जै जै त्रिभुवनराईजी ॥ २ ॥

दोहा—उग्रसेन कियो भूप हरि, सिंहासन बैठाय ॥
लखि मथुरा नर नारि सब, रहे सकल सुखपाय ॥

चौ०-रहे सकल सुख पाय कहत धनि अति मन हर्ष बढाईजी॥
अब करिहैं पितु मात सुखारी प्रभु त्रिभुवनके राईजी॥
यहै बात सब घर घर माई इन समान कोउ नाईजी॥
धनि धनि मात पिता दिन राती जन्मे जब सुखदाईजी॥ १॥
कंसहि सहित असुर सब मारे रानिन मरत बचाईजी॥
कीनो उग्रसेनको राजा निजकर चमर ढुराईजी॥
यदुकुल सुथिर भयो अब सारो सुरन सुमन झरिलाईजी॥
अब सुख पैहैं मात पिता सुनि तिनको दुःख नशाईजी॥ २॥

दोहा-हम फल लीनों जन्म जग, हरि मुख छबिहि निहारि॥
जीवहु युग युग भ्रात दोउ, कहत सकल नर नारि॥

चौ०-कहत सकल नर नारि भूमिको भार हस्यो नँदलालाजी॥
कंस हत्यो नृप उग्रसेन कियो भक्तनके प्रतिपालाजी॥
कहाँ हमारे मात पिता तब बोले दीनदयालाजी॥
उग्रसेन अक्रूर चले संग हरिके बंदीशालाजी॥ १॥
उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो रहे अतिहि हर्षाईजी॥
कहत देवकीसों समुझाई राम कृष्ण दोउ भाईजी॥
आये आज जनु मधुपुरीमांई लीने नृपति बुलाईजी॥
असुर सैन हाति कंसमार कियो उग्रसेन नृपराईजी॥ २॥

दोहा-सुनितिय नैन न नीर भरि, कहत कहा पिय आय॥
सुनिहै दूत कोऊ यहां, कैहै नृपसों जाय॥

चौबोला-कैहै नृपसोंजाय हमाहिं करि पाप जन्म जगआयेजी॥
सो फल हमहिं विधाता दीनो कर्म लिखे सोइ पायेजी॥
वधे सात देखत हम आगे रह्यो इक ब्रजहि भगायेजी॥
तापर बंदि किये हम दोऊ धृक जो वशहि परायेजी॥ १॥
होउ कंसको वंश निमूलो कहाति अतिहि दुखपाईजी॥

कह वसुदेव रोवै मति नारी वे दुखहरण कन्हाईजी ॥
गर्वप्रहारी दीनदयाला जनके सदा सहाईजी ॥
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई हरि त्रिभुवनके राईजी ॥ २ ॥
दोहा-अब जिन होहु अधीरतिय, धरहु धीर सुखपाय ॥
आयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय ॥
चौबोला-देखत जाय बिलाय कंस नृप तूजिन होय दुखाईजी॥
मानहु प्रिया कह्यो अब मेरो स्वप्न वृथा नाहिं जाईजी ॥
मिलिहै तोय सुवन अब तेरो आज काल्हिमें आईजी ॥
इहि अन्तर द्वारे हरि आये लगे कपाट लखाईजी ॥ १ ॥
करुणा करि हरि तिन्हें निहारे खुलिगये वज्रकिवारैजी ॥
लखि वसुदेव कहत मन दोऊ आवत काके वारैजी ॥
जन्म समय जो दरशन दीनों सो हरि रूप दिखारैजी ॥
मिले धाय पितु मात कह्यो तब हमहैं सुवन तुम्हारैजी ॥ २ ॥
दोहा-रोवति मधुर निरखि सुत, सुनाहिं कंस भय पात ॥
मारयो कंस अरु असुर सब, कह्यो कृष्ण सुनमात॥
चौबोला-कह्यो कृष्ण सुन मात पछारे मल्ल सुभट सबमारेजी ॥
द्विरद कुबलिया दंत उखारे और असुर संहारेजी ॥
यह कहि करि पितुमात सुखारे तोरि बंध पग डारेजी ॥
तब जननी निश्चय करजानी रोयकंठ लपटारेजी ॥ १ ॥
बारहि बार कहत उरलाये मैं नाहिं गोद खिलायेजी ॥
द्वादश वर्ष कहां रहे प्यारे जननी लेत बलायेजी ॥
सुन जननीके वचन कृपाला करुणानिध यदुरायेजी ॥
भये प्रेम वश दुखित लखे तब बोले अति सकुचायेजी ॥ २ ॥
दोहा-मति कारि मात विषाद चित, लिख्योन मेव्योजाइ ॥
तुम मनकी अभिलाष सब, अबपुरवैं दोउ भाइ ॥

चौबोला-अब पुरवैं दोउ भाइ ऐसेहरि मात पिता समुझायाजी
पुत्र जन्म जगमें सुखकारी तुम हमते दुख पायाजी॥
मात पिता जाके दुख पावैं सो सुत वृथा कहायोजी॥
सो अब दोष न मनमें दीजै हो तब नाहिं बसायाजी॥ १॥
स्वर्ग पताल जातनाहिं डरिहैं करिहैं तुम मनभाईजी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि लै आवैं मथुरा देहिं बसाईजी॥
सुनि प्रभु वचन मात सुखपायो लीने कंठ लगाईजी॥
अति आनन्द भयो मनमाहिं शारद सकहिं न गाईजी॥ २॥

अथ वसुदेवगृह उत्सवलीला।

दोहा-तव बसुदेव अति हर्षि मन, पुलकित अंग अपारि॥
पूरव पुण्य सुकृत फल्यो, पायो सुत दैत्यारि॥
चौबो०-पायो सुत दैत्यारि हर्षि मन तुरताहि विप्र बुलायेजी॥
प्रथमाहिं संकलपी हतीं सो दईं लक्ष ते गायेजी॥
और दियो बहु दान द्विजनको वंदीजन सुन आयेजी॥
अति उछाह बसुदेव सबनको दिये द्रव्य मनचायेजी॥ १॥
तब देवकी कह्यो पति पाई रही परम हर्षाईजी॥
प्रगटे आज सुवन मम धामा करहु अनंद बधाईजी॥
सुनि वसुदेव बहुत सुख पायो दुंदुभि द्वार बजाईजी॥
यदुवंशी सिगरे जुरआये ध्वज पताक बँधवाईजी॥ २॥
दोहा-रोपे कदली खंभ शुभ, वन्दन माल बँधाय॥
लखि हरि जन्म अनंद छवि, निधि सिधि प्रगटी आय॥
चौबोला-निधि सिधि प्रगटी आय द्वारपर कंचन कलस भरायेजी
गजमुक्तनके चौक पुराये मांदिर सुगँध सिचायेजी॥
सुनि सब मथुरा पुरकी नारी आनँद मंगल गायेजी॥

घर घर मंगल सबहिन साजे बाजे द्वार बजायेजी ॥ १ ॥
नवसंत साज सजीं सब नारी सजि सजि मंगल थारीजी ॥
श्रीवसुदेव धामको आवैं गावत मंगलचारीजी ॥
जाति पाँतिके लोग सकल मिल बंधू अरु हितकारीजी ॥
निज निज योग भेटले आये अति मन हरषित भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—नट नागर गावतं गुणी, भई भवन अति भीर ॥
मानहु सुख आये सकल, धरि धरि मनुज शरीर ॥

चौबो०-धारि धरि मनुज शरीर सकल सुख गृह वसुदेवक आयेजी
तब जननी मन अति सुख पायो दोउ सुत उबट न्हवायेजी ॥
निजकर अंग अंगोछाति जननी तनु दुति लखि सुख पायेजी ॥
केसर मलैय मिलय रुचिकारी चंदन भाल लगायेजी ॥ १ ॥
राजकुँवर बर पहरत जैसे भूषण वसन सजायेजी ॥
क्रीट मुकुट माथे धर दीनों मणिन जटित अधिकायेजी ॥
कलँगी ललित जड़ाव जड़ाई तुर्रा मध्य सुहायेजी ॥
गज मुक्तनके कुंडल कानन अति विसाल छवि छायेजी ॥२॥

दोहा—उर विसाल सोहत सुभग, कंठ पादिकके हार ॥
पंचरत्न अंगद बने, भुजपर छवी अपार ॥

चौबोला-भुजपर छवी अपार चूराकर नवर तनन न निकाईजी ॥
पाणि पल्लवन छाप सुहाई सो छबि बरणि न जाईजी ॥
किंकिणि कलित ललित रवकारी कटिकेहरिपर छाईजी ॥
चूरा चारु मनोहर राजे चरण कमल सुखदाईजी ॥ १ ॥
नील पीत बर वसन नवीने दोऊ सुतन सुहायेजी ॥
चारु अलक मुख शशि झलक छबि निरखि मात सुख पायेजी॥
हुते श्यामके साथ सखा सो बहुरि देवकी मायेजी ॥

१ सोळहो शृंगार। २ चंदन। ३ सिंह। ४ सुंदर।

जानि कृष्ण प्रीतम तब ग्वालन निजकर सब पहरायेजी ॥
दोहा–चकित निहारत ग्वाल सब, कहन सकत कछुनाहिं॥
येतो जाये देवकी, कहत मनहिं मनमाहिं ॥
चौ०-कहत मनहिंमन माहिं झूंठही यशुमति सुवन कन्हाईजी ॥
करत सोच मनहीं मनमाईं ब्रज चलिहैंकै नाईजी ॥
तब दोउ कुँवर चौक बैठारे लीने विप्र बुलाईजी ॥
विधिवत पूजि तिलक रवाये विप्रनदान दिवाईजी ॥ १ ॥
बहुरि आरती मात उतारी लखि नभ सुर यश गायेजी ॥
पुनि सब सखन सहित दोउ भाई निजकर मात जिमायेजी ॥
इहि विधि मार कंस पितु माता तिनके वन्दि छुड़ायेजी ॥
नर नारी हरषित मधुपुरके घर घर आनँद छायेजी ॥ २ ॥
दोहा–परम सुयश यह पलहिमें, गयो त्रिभुवनके माँहि ॥
जीव जल थल नाग सुर, हरष भये सब ठाँहि ॥
चौबोला–हरष भये सबठाँहि कंसको हतन सुने अरु गावैजी ॥
ते न भवबंधन परहिं फिर पाप समूह नशावैजी ॥
मिटहिदारिद दोष दुर्मती विपति निकट ना आवैजी ॥
सकल मन वांछित लहैं फल भक्ति अविचल पावैजी ॥ १ ॥
कठिन शूल संकट हरनयश मंगल करन सुहाईजी ॥
राम कृष्णके चरित अनूपम हरिजन सुन अरु गाईजी ॥
हरिकी कथा अनूदिन गावै सुन्दर नर तनु पाईजी ॥
विहारन सुयश सुभग प्रभुजीको सदा सकल सुखदाईजी ॥ २॥

अथ कुबिजागृहप्रवेश लीला।

दोहा–श्रीयदुकुल शिर मुकुट मणि, भक्तनके सुखदाइ ॥
करी सुखारी मात तब, कुबिजाकी सुधि आइ ॥

चौ०-कुबिजाकी सुधि आइ भवन तजि सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
चले वसन कुबिजाके धामा करी कृपा सुखदाईजी ॥
भाव भजन कुबिजा भइ प्यारी सांच भाव जहाँ पाईजी ॥
नारि पुरुष कछु नाहीं भेदा विवस होत तिहिं जाईजी ॥ १ ॥
सो हित मान लियो यदुराई प्रथम मिली मग आईजी ॥
चंदन चरचि तनक तन दीनो कोटि यज्ञ फल पाईजी ॥
अति अकुलीन कंसकी दासी हरि परसत छबि छाईजी ॥
आये हरि कुबिजाके धामा भक्त बछल कहहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब कुबिजा आनँद भरी, हरिको आवत जान ॥
डारि पाटंवर पांवडे, विधिवतकर सनमान ॥

चौ०-विधिवतकर सन्मान अतिहि आनंद लिये निज धामाजी॥
पूरब पुण्य पुंज सब जागे मगन भई मन बामाजी ॥
टेढीते सूधी करदीनी दियो रूप अभिरामाजी ॥
दासीते रानी भई सुन्दर पूरे सब मन कामाजी ॥ १ ॥
को करि सकै प्रकाश प्रभूके गुण विचित्र सुखकारीजी ॥
भयो रहै दासनको दासै सदा एक चित धारीजी ॥
राजा हरि कुबजा पटरानी कहत सकल नर नारीजी ॥
घर घर कहत सकल पुरवासी क्रियो कहा तप भारीजी ॥ १ ॥

दोहा—तनक अंग चंदन दियो, भई विदित जगमाहिं ॥
महिमा कहत न आवही, पटतरको कोउ नाहिं ॥

चौ०—पटतरको कोउ नाहिं भूलि कोउ कुबिजा कहत बखानीजी
ताहि रिसाय उठत सब कोऊ सोतो भइ पटरानीजी ॥
दासी कहत डरत सब कोऊ अति भय यह मन जानीजी ॥
डारहि मारि सुने जो रानी करत त्रास सब प्रानीजी ॥ १ ॥
जापर कृपाकरैं यदुराई ताहि न यह अधिकाईजी ॥

सदा सदा हरिकी यह रीती भाव भक्त मन चाईजी ॥
धनि धनि कुबजा हरिकी रानी धनि धनि चंदन लाईजी ॥
धनि धनि भवन जहाँ हरि आये धन्य कृष्ण मन भाईजी ॥२॥
दोहा–बसे श्याम कुबिजा सदन, तहँकर कछु विश्राम ॥
पुनि आये वसुदेव गृह, जन मन पूरण काम ॥
चौबोला–जन मन पूरण काम सदा हरि भक्तनके सुखदाईजी॥
ब्रज वासिनकी सुरत करी तब सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
मनमें कियो विचार कन्हाई अब चलिये नंद पाईजी ॥
लै वसुदेव संग दोउ भाई गये जहां नृपराईजी ॥ १ ॥
लिये अक्रूर उद्धवहि बुलाई यादव जुरे सब आईजी ॥
ममहित ब्रजवासी सब आये ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
नन्दादिक सब गोप जितेका रह्यो न कोउ ब्रजमांईजी ॥
हैं सूने मंदिर सब केरे तजे वत्स अरु गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ह्वै हैं यशुमति मात दुखि, जिन पाले दोउ भाइ ॥
सकुचतहों अपने मनाहिं, उनसों ऊऋण नाइ ॥
चौबोला–उनसों ऊऋण नाईं नहीं जो पलटो देहों जाईजी ॥
सुनि हरि वचन परम सुखदाई चले जहां नँदराईजी ॥
सुनी नन्द गोपन यह बाता मारचो कंस कन्हाईजी ॥
प्रजा भाव सब रहे सकाने सांच न मन कछु आईजी ॥ १ ॥
मनहीं मन सोचत नँदराई नहिं आये दोउ भाईजी ॥
ब्रजते आये भोरहि तिनको यामतीन ह्वै आईजी ॥
बल मोहन दोऊ भैया बिन अब कैसे ब्रजजाईजी ॥
कबधौं नैनन देखों तिनको अति व्याकुल मनमाईजी ॥ २ ॥

अथ नन्द विदालीला।

दोहा–उग्रसेन वसुदेव सँग, आये तब दोउ भाइ ॥
देखि नन्द उठ धाय मिल, लीने कंठ लगाय॥

चौबोला—लीने कंठ लगाइ मनहिं मन कहत महर नँदराईजी ॥
अब चलिहैं ब्रजको यह जानी अति आनँद मनमाईजी ॥
लखि वसुदेव बहुत सुख पायो मिले नन्दसों जाईजी ॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे लिये आदर बैठाईजी ॥ १ ॥
नृप वसुदेव उधव सुफलकसुत यादव सकल सुहाईजी ॥
नन्दहि मिले निकट बैठाये मिलि बैठे दोउ भाईजी ॥
और गोप ठाढे सब देखे औरहि रूप कन्हाईजी ॥
नन्द मनहिं मन अति अकुलावत चलत वेग क्यों नाईजी॥२॥

दोहा—सबहीके मनमें बसी, हरि अब प्रीति घटाइ ॥
बोल सकत नहिं प्रेम वश, कहत मनहिं मनमाइ ॥

चौ०-कहत मनहिं मन माइ नन्द तब कह्यो मुख वचन कन्हाईजी
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो मुखते कह्यो न जाईजी ॥
सुनि कहा कहत अहो गोपाला झझकि उठे नंदराईजी ॥
किन कीन्हो प्रतिपाल कन्हाई यह तुम काय सुनाईजी ॥ १ ॥
मति मोसों ऐसे कहो मोहन चमकत जिय नँदराईजी ॥
डारि सकत नहिं नैननते जल गहभरहिय भर आईजी ॥
तब हरि मधुर कह्यो नंदजीसों तुमसों कहत लजाईजी ॥
कही गर्ग तुमसों जो वाणी सो तुम सांच न पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—पुत्र हेतु हमसों कियो, दियो अधिक सुख चैन ॥
हँसत खेलत ब्रज जात यह, लखे नहीं दिन रैन ॥

चौबोला—लखे नहीं दिन रैन सुखहिमें ये सब दिवस वितायाजी ॥
तुम हमको सुख दीने सो सुख मुखते कहत न आयाजी ॥
तुम सम मात पिता नहिं हमरे हम तुम सुवन कहायाजी ॥
बिछुरन मिलन मोह माया जग विधि परपंच बनायाजी ॥ १ ॥
ह्वै हैं दुखित यशोमति मैया ताते तुमहि पठाईजी ॥

यशुमतिसों विनती मम कहियो तुम्हरो सुवन सदाईजी ॥
मेरी सुरत न उरते टारो तुमते न्यारे नाईजी ॥
हरि यों नन्दहि वचन सुनाई बहुरि रहे सकुचाईजी ॥ २ ॥
दोहा—निठुर वचन सुनि श्यामके, भये विकल अति नन्द ॥
उमँगि नीर नैनन चल्यो, परिगये दुखके फंद ॥
चौबोला—परिगये दुखके फंद दुखित सब गोप सखा समुदाईजी ॥
यह सब चरित किये सुफलक सुत कहत मनाहिं मन माईजी ॥
कहत न ऐसे कबहु कन्हाई परे चरण नँद धाईजी ॥
हों मोहन ताजि चरण न जैहों कहा लेहों ब्रज जाईजी ॥ १ ॥
मधुवन तुमहिं छांडि जो जाऊं यशोदहि कहा कहुँ जाईजी ॥
तुम विन काहि गोद कर लैहैं सुनताहि ऐहैं धाईजी ॥
पंथ निहारत ह्वैहै मैया चलहू ब्रजहि कन्हाईजी ॥
सद माखन मथि कीनों ह्वै है तुम विन काहि खवाईजी ॥ २ ॥
दोहा—विन देखे कैसे जियें, होत निठुर कत श्याम ॥
नहिं जान्यो परताप यह, हो तुम सुखके धाम ॥
चौबो०-हो तुम सुखके धाम बारही बरष भूल रहे भारेजी ॥
अब प्रगटे वसुदेव कुमारा गर्ग वचन निरधारेजी ॥
कत हम काज महारिपु मारे दारिद दुख कत टारेजी ॥
डारि न दियो कमल कर गिरिवर दब मरते हम सारेजी ॥ १॥
कहैं नन्द यों विकल अधीरा सोच रहे मन माईजी ॥
भई कठिन विछुरनकी पीरा वचन कहे नहिं जाईजी ॥
देखि प्रीति नँदकी वसुदेऊ मनहीं माँहि सिहाईजी ॥
सकुच रहे तब प्रेम विवस सब मुखन कहत कछु नाईजी ॥२॥
दोहा—मानहु पन्नगके डसे, व्याकुल सबै अहीर ॥
ठाढे काढे चित्रसे, हरि मुख लखत अधीर ॥

चौ०-हरि मुख लखत अधीर नन्दको हलधर यों समुझावेजी ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवें तुम विन कहँ सुख पावेजी ॥
कह्यो गर्ग तुमसों सब कारण हरि भूभार नशावेजी ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ तुमरेइ सुवन कहावेजी ॥ १ ॥
हमें तुम्हें सुत पितुको नातो अंतर होन न पावेजी ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो उरते ध्यान न जावेजी ॥
जननि अकेली व्याकुल है है तुम गये धीरज आवेजी ॥
व्याकुल सुनत नंद यह वाणी पुनि कर जोर सुनावेजी ॥ २ ॥

दोहा-ब्रजमें मिल फिर आहु हरि, अब सँग चलहु कन्हाइ॥
कंस मार सुरकाज कियो, उग्रसेन नृपराइ ॥

चौबोला-उग्रसेन नृपराइ भई सब यदुकुलके मन चाईजी ॥
तदपि यशोमाति विन गिरिधारी तुम्हरी टेक न पाईजी ॥
ऐसे कहि अति विकल भये जब रहे नन्द गहि पाईजी ॥
भई क्षीण दुतिहीन मती तब नैनन नीरे बहाईजी ॥ १ ॥
नहीं विरह संयोग हरीके माया रहित मुकुंदैजी ॥
सब घटवासी एक रसहि प्रभु ब्रह्म पूरणा नंदैजी ॥
देखि विरह व्याकुल नँद उपनँद और सखनको वृंदैजी ॥
विछुरत तजत चहत हैं प्राणै रच्यो चरित ब्रजचंदैजी ॥ २ ॥

दोहा-हरि माया दुस्तर अती, रहत जगत भरमाय ॥
तिन कछु द्वन्द्व कियो तबै, बोले हरि नँदपाय ॥

चौ०-बोले हरि नँद पाय तात तुम कतहि रहे पछिताईजी ॥
ब्रज अरु मथुरा अंतर कितनो दूर न कहुँ हम जाईजी ॥
कर विचार देखो मन माईं तुम्हरे निकट सदाईजी ॥
हैं ब्रजके नर नारि दुखारी ताते तुमहिं पठाईजी ॥ १ ॥

१ पुत्र। २ पानी। ३ कठिन। ४ बीच।

ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा तब नँद विनय सुनाईजी ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई तो मम कहा बसाईजी ॥
जैहों ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे वचन न टारे जाईजी ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई नीचते ऊंच चढाईजी ॥ २ ॥
दोहा–परम गँवार अरु ग्वाल हरि, हौं प्रभु मैं पशुपाल ॥
भये धन्य सब जगतमें, तुम प्रताप गोपाल ॥
चौबोला–तुम प्रताप गोपाल गये सब पाप संताप नशाईजी ॥
भरी साखि चौदहो भुवन सब सुर मुनि वेदन गाईजी ॥
ऐसे कहि नंदराय परे पुनि हरिके चरणन माईजी ॥
कहो जान सनमान नन्दको लीन्हो श्याम उठाईजी ॥ १ ॥
आगे बहुत संपदा राखी यों वसुदेव सुनाईजी ॥
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा मुखते कहत न आईजी ॥
बालक ये अपनेही जानो यहँ वहँ भेद न राईजी ॥
सुनि सुनि नंद महर पछितावै तनुकी सुरत भुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–उरध श्वास भरि दृगन जल, वचन कहे नहिं जाइ ॥
सो कछु संपति लेय नँद, विनती बहुरि सुनाइ ॥
चौबोला–विनती बहुरि सुनाइ श्याम सों कह्यो महर नँदराईजी
ब्रज पर कृपा होय नहिं थोरी माँगत यह तुम पाईजी ॥
तब सब गोप नृपति पहिं आये कियो बोध नृपराईजी ॥
गोप सखा बोधे हरि सबही दीने ब्रजहि पठाईजी ॥ १ ॥
चले सकल ब्रज सोचत मन मन हारे मनहुँ जुवारीजी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं मन सब अधिक दुखारीजी ॥
लटपट चरण परत मगमाई तनु सुधि सबन बिसारीजी ॥
ब्रज तन जात विलोकत मधुवन विरह व्यथा भई भारीजी॥२॥
दोहा–भये विरह वारिधमगन, अति अचेत अकुलाय ॥

श्याम राम तजि मधुपुरी, आये ब्रजनियराय ॥
चौबोला—आये ब्रजनियराय गये उत गृह जनके सुखदाईजी ॥
ब्रजबासिनको नेह कन्हाई पुनि पुनि बरनत जाईजी ॥
बार बार नँद मन पछितावे चूक परी सेवकाईजी ॥
किये कर्म हम परम असाधू कहँ लगि कहिये गाईजी ॥ १ ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई हरि पै गाय चराईजी ॥
रंचक दधिके काज रिसाई बांधे ऊखल लाईजी ॥
इन्द्रकोप ब्रज लोग बचाये वरुण लोक गये धाईजी ॥
करि दीने आगे दोउ भाई तन धन नृप भयपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसे निज करनी समुझि, परे धरणि मुरझाय ॥
व्याकुल बल मोहन विना, इत जोवति मगमाय ॥
चौ०-इत जोवति मग माय यशोमति सोचत अति मन माईजी ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी अतिहि हृदय हरषाईजी ॥
मानहु धेनु वत्स हित लागी उठि दौरी अतुराईजी ॥
कनियां लेवेको मन चाई आये जनु दोउ भाईजी ॥ १ ॥
धाई अति हरषित हिये आतुर सुनत रोहिणी माईजी ॥
ब्रजतिय अतिहिय भरी हुलासा दरश आश सब आईजी ॥
तिहिं क्षण अति आनंद विहारन ब्रजवासी समुदाईजी ॥
अति संकोच वश नंद विकल तहां सो दुख बरणि न जाईजी॥२॥

अथ ब्रजकी विरह लीला।

लावनी।

मन मोहन सों मिलने हित नंद पै आई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥
टेक—बूझति नंद सों अकुलाय यशोमति माई ॥

कहां हैं मेरे घनश्याम राम दोउ भाई ॥
व्याकुल भये सुनतहि नंद कह्यो नाहिं जाई ॥
नैननभरि डारत नीरहि नारि नवाई ॥
सब देखत ब्रजकी नारिहि गई झुराई ॥
तहँ राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ १ ॥
जान्यो अब आन बनी विधि सो सुधि आई ॥
जो ब्रजबासिनको प्रथमहिं गर्ग सुनाई ॥
व्याकुल सब विन ब्रजनाथ रहे पछिताई ॥
हम कौन दोष प्रभु तजि यों टेरलगाई ॥
बिलखति अति यशुमति नंद सों कहत रिसाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ २ ॥
धृक धृकहि महर कहा कियो यो वचन सुनायो ॥
मथुरातजि सुत ब्रज पग किहिं भांति चलायो ॥
फाटी नाहिं छाती विदा होत तजि धायो ॥
कैसे रहे तनुमें प्राण इहां लों आयो ॥
दशरथकी कथा न सुनि जब रथ लख्यो नाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ ३ ॥
रहिहों ह्वै हरिकी धायहि मथुरामाई ॥
अब ब्रज अपनो नंदलीजै ठोक बजाई ॥
यह सुनतहि धरणी परे नंद मुरझाई ॥
सब देखत व्याकुल ब्रजके लोग लुगाई ॥
कहां छांडे यशुमति टेर कहाति दोउ भाई ॥
तहां राम श्याम दोउ नाहिं देखि मुरझाई ॥ ४ ॥

दोहा–हमरो जिवन प्राण धन, लियो वसुदेव छिनाय ॥
सुफलक सुत वैरी भयो, लेगयो हरि ब्रज आय ॥

चौबोला–लेगयो हरि व्रज आय श्यामके संग जाननाहिं पाईजी ॥
सिखये इन लोगनके लागी बैठरही घरमाईजी ॥
हरिके संग जावती जो मैं छांडति नाहिं कन्हाईजी ॥
ऐसे रोवत करत विलापू दुखित यशोमति माईजी ॥ १ ॥
हरि बिन सब नर नारि उदासी गृह वन कछु न सुहाईजी ॥
मनहुँ मसान भूमि धर खाई लागत मन कहुँ नाईजी ॥
पूछत नंदहि यशुमति माई कहो कहा कह्यो कन्हाईजी ॥
हरि कछु मोहिं सँदेशो दीनों विदा किये जब आईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम कछु विनती नहिं करी, हरिसों शीश नवाय ॥
मैं अपनो सों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवन राय ॥

चौबोला-वे प्रभु त्रिभुवन राय करैं सो जो उनके मन चाईजी ॥
कहिकै तोहिं प्रणाम बहुरि तब ऐसे कह्यो कन्हाईजी ॥
करिकै कछु सुर[2] काज बहुरि व्रज मिलिहों तुमसों आईजी ॥
दुखी होन पावे नहिं मैया यों बोले बलि भाईजी ॥ १ ॥
धीरज देहु तात तुम जाई पुनि मिलिहैं हम आईजी ॥
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी वचन तजे नहिं जाईजी ॥
सुनि सँदेश यशुमति दुख पायो रही चरण मनलाईजी ॥
एक पलक विछुरे हरि नाईं मिलन आश मनमाईंजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत ग्वाल सब घरन घर, किये श्याम सो ख्याल ॥
नाहिं निबहै जान्यो तबै, हन्यों रजक[3] ततकाल ॥

चौ०-हन्यो रजक ततकाल कंसको चन्दन हरि अँग लायाजी॥
रूप अनूप कुबरिया दीनों धनुपहि तोरि बहायाजी ॥
फिर दोउ भाइन गजको मारयो तब रंगभूमि सिधायाजी ॥
असुर अनेक युद्ध करि मारे मल्लन मार गिरायाजी ॥ १ ॥

१ दुःख । २ देवता । ३ धोबी ।

कहतहुते ब्रजमें हरि जैसे तैसे कंस नशायोजी॥
केश पकरि महि तुरत गिरायो यमुना माहिं बहायोजी॥
उग्रसेनको राजतिलक दियो निजकर चमर ढुरायोजी॥
मथुरा नर नारी आनंदे सब मन अति सुख पायोजी॥ २॥
दोहा–देवकी अरु वसुदेवसों, पुनि भेंटे हरि जाय॥
तात मात तब भ्रात दोउ, कह्यो परम सुख पाय॥
चौबो०-कह्यो परम सुख पाय हरीको भयो उत्सव तहां भारीजी॥
दियो दान बहु विप्र हँकारी नाना द्रव्य अपारीजी॥
हरिको भूषण वसन सजाये मंगल गायो नारीजी॥
बहु सम्पति वसुदेव लुटाई घर घर मंगलचारीजी॥ १॥
वासुदेव सब नाम सुनावैं अब न गोपाल कहावैंजी॥
यदुकुल कमल सकल जगनायक विरद वान गुण गावैंजी॥
भये कृष्ण मथुराके राजा आहिरन देखि लजावैंजी॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई कुबजा सदन सिधावैंजी॥ २॥
दोहा–भये जासु वश अति प्रभुः, रहे अधिक हित मानि॥
मधुपुरिके राजा हरी, कुबिजा भइ पटरानि॥
चौ०-कुबिजा भइ पटरानि बात यह सुनी सकल ब्रजनारीजी॥
गईं विरह तनु ताप सिराई सौति शाल भयो भारीजी॥
मिटी श्याम आवनकी आशा भईं दुखित सब ग्वारीजी॥
रहीं सोच बैठी कोउ ठाढी दृगन बहत जल धारीजी॥ १॥
ब्रज तिय सुनि कुबिजाकी बातें जुरी सकल मिलि आईंजी॥
लागीं कहन परस्पर वाणी मन दुख मुख हर्षाईंजी॥
कुबिजा दासी कंसरायकी कीनी नारि कन्हाईजी॥
आपुन पति वह वाम नाम यह कियो विदित जगमाईंजी॥ १॥
दोहा–लै चंदन मगमें मिली, ताते अति मन भाय॥

भली बुरी चीन्हीं नहीं, दई बड़ाई ताय ॥
दई बडाई ताइ कहत वह सोई करत कन्हाईजी ॥
निशि दिन वाके गुणहिं बखाने विसरत इक क्षण नाईंजी ॥
अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं नारि अनोखी पाईजी ॥
श्याम सदाके ऐसेइ माई कह्यो कछु रोष जनाईजी ॥ १ ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो कानी लागि सुनाईजी ॥
नई कूबरी नारि बताई तबहिं गये सँग धाईजी ॥
बोली और एक तिन माई कुबिजा देखि कन्हाईजी ॥
दधि बेचन जब जात तहांरी तब हमहूँ लखिपाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अँग टेढी अरु मालिनी, हँसत जाहि सब कोइ ॥
बसति नृपतिके महल ढिग, करी सुन्दरी सोइ ॥
चौबोला–करी सुन्दरी सोइ श्याम अरु कुबिजा कह सबकोईजी
कोटि बार दाहौ अनल अरु कोटि कसो किन सोईजी ॥
तो कहुँ पीतर ते री आली कैसेहुँ सोनो होईजी ॥
हमें होत सुनि हँसी श्यामने दई लाज सब खोईजी ॥ १ ॥
जाय कूबरी काज मधुपुरी मारयो कंस कन्हाईजी ॥
बोली और सखी तिन माई तुम अलि बात न पाईजी ॥
कुबजा सदा श्याम को प्यारी तब ऐसी मन भाईजी ॥
राखी तहां तिहीं कर दासी अवगति हरि गुणराईजी ॥ २ ॥
दोहा–रूप रत्न धरि कूबमें, राख्यो गुप्त दुराय ॥
जैसे मोती सीपमें, परगट नाहिं लखाय ॥
चौबोला–परगट नाहिं लखाय मार नृप लई ताहि अबजाईजी ॥
अब ताके गुण प्रगट बखाने कीनी प्रीति कन्हाईजी ॥
ब्रज बनिता त्यागी अब ताते बात श्यामकी पाईजी ॥
वेदिन हरि अब विसर गयेरी कहति सखी इक आईजी ॥ १ ॥

लिये फिरतही तब सब कनियां निरखिनिरखिहरषानीजी ॥
घर घर डोलत माखन खाते उरहन देत लजानीजी ॥
बहुरि भये तब कछुक सयाने बहुत अचकरी ठानीजी ॥
जो जो गुण हमसों उनठाने हम तामें सुख मानीजी ॥ २ ॥
दोहा—देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ॥
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास ॥
चौबोला—बसे कूबरी पास यशोमति रहि गइ लाडलडाईजी ॥
भये देवकी पुत्र जाय अब ताहूको विसराईजी ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो अब पतियारो नाईजी ॥
जो जन जगमें कृतहि नमानें निज स्वारथ मनमाईजी ॥
ज्यों भौंरा कलगूंज सुहाई बसत सुमन हितलाईजी ॥
रसहि चाखि पुनि हित नाहिं मानें तजत तुरत उठधाईजी ॥
पालत काग पिकहि हितमाने निजकुल मिलत सो जाईजी ॥
सोहि भई हमहीं अरु नंदहि कहिये कासों माईजी ॥ २ ॥
दोहा—बैठत आसन नृपतिके, मुरली लखत लजाइ ॥
मोरपंख देखत नहीं, नामलेत ब्रजनाइ ॥
चौबोला—नामलेत ब्रजनाइ चित्रहू देखिपरै जो गाईजी ॥
तोलजाय इत उत मुखफेरै लखै न वत्स सुहाईजी ॥
सुरत करत ग्वालनकी नाईं हमरे नाम चपाईजी ॥
जिनकी प्रकृति परी यह आई लखत न पीर पराईजी ॥ १ ॥
भयो नयो अब राज वहांरी भये नये पितु मातैजी ॥
नई नारि कुबिजा हरि कीनी नयो नेह नयो नातैजी ॥
कुंजकेलि रसरास विहारा विसरे ब्रजकी बातैजी ॥
हमें दियो दुख दिन दिन दूनो गये आपनी घातैजी ॥ २ ॥

१ विश्वास। २ फूल। ३ कौवा। ४ कोकिल।

दोहा–करैं परेखोकौनको, जाति न पांति कन्हाइ ॥
मानें दुख तिनसों कहा, सोच देखि मन माइ ॥
चौबोला–सोच देखि मन माइ नहीं अब गोपीनाथ कन्हाईजी ॥
नहीं ग्वाल नहिं नँदकेलाला कहत कोऊ तहाँ नाईजी ॥
यदुकुल दीप भाल बर गावत वासुदेव कहाईजी ॥
मोरपच्छ माथेपर नाईं नहीं गुंज उर माईजी ॥ १ ॥
बासुरली सँग गई सगाई गृह बन प्रीति घटाईजी ॥
दिन दशनेह करो किन काजै उन सब प्रीति भुलाईजी ॥
सबहि अयान भईं तिहिं काला मुरली ध्वनि सुनि पाईजी ॥
कहत एक सुनरी ब्रजबाला अब ब्रजनाहिं सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तब ब्रज पर कृपाहुती, राखो कर गिरि कान्ह ॥
बहुरो यह अचरज कियो, दावानल मुखपान ॥
चौबोला–दावानल मुख पान समुझि अब सकुच जीयरहजाईजी
भयो वज्रते कठिन हियो यह फट्यो सो बिछुरत नाईजी ॥
अबलागे दिन जान सखी सुन बिन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
रहत नविन देखे वह मूरति प्राण देहके माईजी ॥ १ ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये लीने और बनाईजी ॥
जनु तैसेही कुँवर कन्हाई विरहा सृष्टि चलाईजी ॥
भई विरह वश सब ब्रजबाला गावत गुण सुखदाईजी ॥
व्यापी दशइँ अवस्थातनमें भयो कठिन दुख आईजी ॥ २ ॥
दोहा–विन देखे कैसे जियें, सुन्दर श्री बलवीर ॥
ज्यों चकोर विन चँद दुखी, जिमि वारिज विननीर ॥
चौ०–जिमि वारिज विन नीर विवरन तिमि खंजनग्रीषमपाईजी
जैसे दुखी भ्रमर विनकुंजन और न कछु मनभाईजी ॥
श्याम सिंधुते बिछुर परेरी तरफतमीन सुहाईजी ॥

भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाई धीर धरत दृग नाईंजी ॥ १ ॥
गृह बन कछु न सुहात निहारे विन श्रीकुँवर कन्हाईजी ॥
विरह व्यथा जारत तन लागत तपत चन्द्र अधिकाईजी ॥
विना श्वासकी देह सखीजिमि और रूप ह्वै जाईजी ॥
तिमि लागत ब्रज गेह भयानक कीनों हरि सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यहि विरियां आवत हरी, वनते धेनु चराय ॥
दूरहिते सुन्दर सुखद, करगहि वेणु बजाय ॥

चौबो०—करगहि वेणु बजाय कबहुँ सखी वे हरि कुँवर कन्हाईजी
गावत ऊंचे सुरन रसाला सो छबि बरनि न जाईजी ॥
कबहुँक लै लै नाम सुनावें धोरी धूमरि गाईजी ॥
देत दृगन सुख बनते आवत मोहन रूप दिखाईजी ॥ १ ॥
बहुरौं कबहुँ देखिये वैसे बोली इक तिन माईजी ॥
बैठे ग्वाल बालकन साथे बांटत खात कन्हाईजी ॥
इक दिन दधि चोरत मम धामा वह छबि लखि सुखदाईजी ॥
वे भाजे मम लखि परछाई धाय गही मैं बाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लै कनियां मुख पोंछतब, रही परम हरषाय ॥
रहे लागि छाती हरी, सो सुख कह्यो न जाय ॥

चौबो०—सो सुख कह्यो न जाय सुमिर अब वे गुण गण मन माईजी
हरि बिन रहत अधम तनु प्राणा निकसत ये क्यों नाईजी ॥
मन मोहनके खेल सखीरी कहां लगि कहिये गाईजी ॥
ज्यों दीपकबिन तेल श्याम बिन गोकुल हमहिं लखाईजी॥१॥
सुमिर सुमिर गुण श्यामसुन्दरके रहत नैन जल छाईजी ॥
भये सकल बिन कान्ह हमें अब कहिये काहि सुनाईजी ॥
एक प्रलाप करत तिन माई कहै कोउ हरिसों जाईजी ॥
लेहु आप निज गायन घेरी फिरत ग्वालते नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुम विन नाहिं पतियात कोउ, विडुरि फिरत सब गाइ॥
अपने जानि समारिये, विसरहु मतिहि कन्हाइ ॥
चौबो०-विसरहु मतिहि कन्हाइ बिलःखत सकल वत्स अरुगाईजी
नेक सुनावहु वेणु रसाला अपने मुख सुखदाईजी ॥
बूडत विरह सिंधुमें नारी काढि लेहु गहि बाईंजी ॥
कोऊ कहत कहै कोउ जाई वसहु बहुरि ब्रज माईजी ॥
नाहिं जगाय अब बनाहिं पठावैं गैयां नाहिं चरावैंजी ॥
माखन खात बरजि हैं नाहीं यशुमति पै नाह जावैंजी ॥
चोरी प्रगट करैं नहिं काऊ अवगुणता नजनावैंजी ॥
नहिं दांवेरी यशोदहिदेहैं अब नाहिं हाथ बँधावैंजी ॥ २ ॥
दोहा–मांगत दान न बरजि हैं, हठ नाहिं करिहैं मान ॥
आयदरश अब दीजिये, रहत न तुम विनप्रान ॥
चौबोला–रहत न तुमबिन प्रान ऐसे कहि ल्यावहिं फेरमनाईजी
तौ नँद नंद गुपाल सांवरो वसहिं बहुरि ब्रजआईजी ॥
एक कहति अब हरि क्यों आवै नृपतजि ग्वाल कहाईजी ॥
ह्वां गजरथ चढि चलत कन्हाई ह्यां क्यों चारत गाईजी ॥ १ ॥
वहां पटंबर पहिर दिखावै इहां कमर क्यों भावैजी ॥
अब उन यशुमति मात विसारी हमरी कौन चलावैजी ॥
बोली अपर सखी विलखाई अब हरि निठुर लखावैजी ॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी नीर मीन महिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा–तरफतमीन ढिग नीरके, नीरहि दया न आत ॥
बाताअवाधनाह सुधिलई, चलत कही यहबात ॥
चौबोला–चलत कही यह बात कंसही जीत मिलौंगो आईजी ॥
हारे दृग उतही मग जोवत डारत जल विलखाईजी ॥

१ तितिर वितिर। २ रस्सी। ३ मछली।

जैसो दिन निशि तैसी जाई नींद परत पल नाईजी ॥
मन्द समीर चन्द्र इनतेरी जरत सेज अधिकाईजी ॥ १ ॥
सपनेहूं तो देखिये आली दृगन नींद नहिं आईजी ॥
क्यों हूँ लहत चैन मन नाईं कीने विविध उपाईजी ॥
सुन सखि हों तोसों कहुँ सांची बोली इक तिनमाईंजी ॥
जबते बिछुरे श्याम आज मैं लखे स्वप्न सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आये जनु मम धाम हँसि, गहि भुज नंद किसोर ॥
कहा कहूँ बैरन भई, रही नींद नहिं ओर ॥
चौ०-रही नींद नहिं और चकइ जिमि लखी आप निज छाईंजी
पति हित जानि हरषि मनमाईं निठुर बायु जब आईजी ॥
दियो पवन तब सलिल डुलाई लखि चकई पछिताईजी ॥
मेरी दशा भई जब जागी देख्यो ढिग कोउ नाईजी ॥ १ ॥
देखहुँ कहा अधिक अकुलाई तब मोहिं काम जराईजी ॥
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊँ जानि चूक पछिताईजी ॥
बिछुरतही नाहिं तज्यो शरीरा अब यह पीर लखाईजी ॥
महादुखित अब अंग हमारे रहत नैन जल छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चहत रूप लखे श्यामको, अतिहि रहे भरमाइ ॥
रसना हरिके नाम बिन, भाषन चह अरुनाइ ॥
चौबोला—भाषनचह अरुनाइ जबहिंते बिछुरे हरि सुखरासेजी ॥
तबतें भये सबै दुखदाई खान पान बनवासेजी ॥
वेई निशि वेइ दिवस वेई सब वेई ऋतु वेइ मासेजी ॥
बदले सबै स्वभाव जनुः अब बिन हरि मदन विलासेजी ॥ १ ॥
अब या ब्रजमें एरी आली चली ओरही चालेजी ॥
भये दुखद जे सुखदहते सब विमुख भये गोपालेजी ॥
गृह कंदरा सेज भइ शूली शशिहि तप्त विकरालेजी ॥

मलयज मनहुँ अग्नि सम तूली लगत अंग जनु ज्वालेजी ॥२॥
दोहा–फूली डारी सकल बन, अरुण सुमन भरभार ॥
झरत देखियत सुमन सब, मानहु परत अँगार ॥
चौबोला-मानहुँ परत अँगार हरी विन लागत फूल दुखारेजी ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे सो अब विषकी झारेजी ॥
त्रिविध समीर तीरसम लागत कोकिल शब्द अँगारेजी ॥
तप्त तेल सम बारिद चातक जारत अंग हमारेजी ॥ १ ॥
सुन सखि चातक दोष न दीजै याकी हम बलि जावैंजी ॥
जैसे पिय पिय हम रटलावें तैसेही वहगावैंजी ॥
आप सुधारस पी सुख पावे विरहिन टेर जनावैजी ॥
जो ये खग नहिं करत सहाई तो दुख अधिक सतावैजी ॥ २ ॥
दोहा–या पक्षी सम औरको, सुन सखि सुकृत समाज ॥
सफल जन्महै तासुको, जो आवै परकाज ॥
चौबोला–जो आवै परकाज कहत यों मगन श्याम रस नारीजी॥
सोवत जागत निशि दिन सारी नाहिं विसरत बनवारीजी ॥
पथिक जात मधुबन तन हेरचो तिहिं घेरचो सब ग्वारीजी ॥
कहत पाँय हम परैं तिहारे सुनहू बात हमारीजी ॥ १ ॥
उतहैं वसत कृष्ण ब्रजनाथा कहियो तिंनसों जाईजी ॥
तुम जु इन्द्रको यज्ञ नशायो गिरिधर ब्रजहि बचाईजी ॥
सो अब वह विरहा ह्वै आयो चाहत ब्रजहि बहाईजी ॥
बरषत निश दिन दृग घन कारे उर विच धार लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–व्यथा प्रवाह बढ्यो अतिः बुडत विरह ब्रजनारि ॥
चितवत मग तुमरोहारिः, लीजै आय उबारि ॥
चौबोला–लीजै आय उबारि दरश अब देहु नाथ अभिरामाजी
जैसे मीन सलिलते न्यारी तरफत तुम बिन बामाजी ॥

एक बार ब्रजमें फिर आवो गोपिन हित घनश्यामाजी ॥
तुम विन ब्रज सब ऐसो लागत जिमि दीपक विन धामाजी ॥१॥
अब वह कृपा भई कहा मोहन मिलते वेणु बजाईजी ॥
जात प्राण तन ताजि गोपिनके पुनि कहा करिहो आईजी ॥
सुनहु पथिक तोहिं राम दोहाई कहियो यह समुझाईजी ॥
तुम विन राधेके तनु आई सब विपरीत बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–वदन छपाकर छविहुती, सो सब लई छिपाय ॥
कलंक निसानी रहि गई, देखहु हरि निज आय ॥

चौबोला–देखहु हरि निज आय कमल पखुरीसे नैन सुहाईजी॥
सो अब मनहु रंग निचुरेसे रहत अधिक मुरझाईजी ॥
आंचलगे कंचन तिमि तनुहीं विरहानलते ताईजी ॥
कदली दल सी पीठ सुहाई सो मनु उलटि बनाईजी ॥ १ ॥
सुखकी संपति सकल नशाई कोकिल कलन सुहाईजी ॥
अब सब साध मानकी नाशी दरश आश मनमाईजी ॥
चातक पिक मृग अलि इनते तब देखतही अनखाईजी ॥
अब तिनसों पूछतहैं धाई तुम पद ध्यान लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ललितादिक सब सखिनसों, रहती गर्व बढाय ॥
अब तिनसों अकुलायकै, मिलत रोय उठ धाय ॥

चौ०-मिलत रोय उठ धाय सुधि बुधिः तनुकी सकल नशाईजी॥
गयहु सकल आनन्द हृदयमें रह्यो विरह दुख छाईजी ॥
होन चहत दशई दशा अब वेगि मिलो तिहिं आईजी ॥
कहत सँदेशे श्याम सुन्दरसों निज निज हेत जनाईजी ॥ १ ॥
पथिकहि चलन देत नाहिं कोऊ ताहि सांझ भइ आवैजी ॥
विरह विकल सब ब्रजकी बाला हरि वियोग अकुलावैजी ॥
जिहिं तिहिं कहि उर व्यथा जनावै हरि बिन कछु न सुहावैजी ॥